इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

BSOG - 173
विकास : पुनर्चिंतन

खंड-1
विकास पुनरावलोकन **9**

खंड-2
विकास का सिद्धांत **55**

खंड-3
भारत में विकासात्मक शासनकाल **143**

खंड-4
विकास कार्यान्वयन (प्रैक्सिस) के मुद्दे **175**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विशेषज्ञ समिति

प्रो. वी. खाखा,
टी.आई.एस.एस., गुवाहटी

प्रो. जे.के. पुंडीर,
सीएसएस विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रो. श्रीनिवास राव,
जेएनयू, नई दिल्ली

प्रो. मधु नागला,
एमडीयू, रोहतक

प्रो. देवल के. सिंहराय
समाजशास्त्र, इग्नू

प्रो. टी. कपूर
समाजशास्त्र, इग्नू

प्रो. नीता माथुर,
समाजशास्त्र, इग्नू

प्रो. एस.बी. उपाध्याय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

प्रो. जगपाल सिंह,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

प्रो. रवीन्द्र कुमार,
समाजशास्त्र, इग्नू

डॉ. अर्चना सिंह
समाजशास्त्र, इग्नू

डॉ. बी. किरणमयी
समाजशास्त्र, इग्नू

डॉ. आर. वाशुम
समाजशास्त्र, इग्नू

पाठ्यक्रम समन्वयक

प्रो. रवीन्द्र कुमार,
समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

पाठ्यक्रम संपादक

प्रो. रवीन्द्र कुमार,
समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई	लेखक
खण्ड 1: विकास पुनरावलोकन	
इकाई 1: विकास बोध	प्रो. बी.बी. मल्लिक, समाजशास्त्र विभाग बीबीएयू, लखनऊ
इकाई 2: विकास के कारक और साधन	डॉ. विनोद आर्या, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा
इकाई 3: विकसित, विकासशील और अविकसित	डॉ. विनोद आर्या, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा
खण्ड 2: विकास का सिद्धांत	
इकाई 4: आधुनिकीकरण, नगरीकरण और औद्योगिकीकरण	प्रो. मनीषा त्रिपाठी पांडे, एचओडी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
इकाई 5: विकास पर परिप्रेक्ष्य	प्रो.मनीषा त्रिपाठी पांडे, एचओडी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
इकाई 6: वैश्विक प्रणाली सिद्धांत	कनिका कक्कड़, सहायक प्रोफेसर, जानकी देवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
इकाई 7: मानव और सामाजिक परिप्रेक्ष्य	डॉ. चारु साहनी, स्वतंत्र शोधकर्ता
इकाई 8: पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य	प्रो. बी.बी. मल्लिक, समाजशास्त्र विभाग, बीबीएयू, लखनऊ
इकाई 9: नारीवादी परिप्रेक्ष्य	गीतांजलि अत्री, रिसर्च स्कॉलर, जेएनयू, सीएसएसएस, जेएनयू, नई दिल्ली
खण्ड 3: भारत में विकासात्मक शासनकाल	
इकाई 10: पूंजीवाद, समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था	प्रो. रवींद्र कुमार, समाजशास्त्र, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 11: स्वतंत्रता के रूप में विकास	कनिका कक्कड़, सहायक प्रोफेसर, जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
खण्ड 4: विकास कार्यान्वयन (प्रैक्सिस) के मुद्दे	
इकाई 12: विकास, प्रवासन और विस्थापन	डॉ. ओम प्रकाश मांझी, स्वतंत्र शोधकर्ता, दिल्ली
इकाई 13: आजीविका और स्थिरता	डॉ. उज्मा अजहर, स्वतंत्र शोधकर्ता, दिल्ली
इकाई 14: जमीनी स्तर पर पहल	डॉ. उज्मा अजहर, स्वतंत्र शोधकर्ता, दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी. इग्नू, नई दिल्ली

श्री यशपाल
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी. इग्नू, नई दिल्ली

मार्च, 2021

© इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN :

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सां. नि. एवं वि. प्रभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : आकाशदीप प्रिंटर्स, 20–अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

मुद्रक :

पाठ्यक्रम विषय

		पृष्ठ
प्रस्तावना		**5**
खंड 1	**विकास पुनरावलोकन**	**9**
इकाई 1	विकास बोध	11
इकाई 2	विकास के कारक और साधन	24
इकाई 3	विकसित, विकासशील और अविकसित	38
खंड 2	**विकास का सिद्धांत**	**55**
इकाई 4	आधुनिकीकरण, नगरीकरण और औद्योगिकीकरण	57
इकाई 5	विकास पर परिप्रेक्ष्य	68
इकाई 6	वैश्विक प्रणाली सिद्धांत	84
इकाई 7	मानव और सामाजिक परिप्रेक्ष्य	102
इकाई 8	पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य	113
इकाई 9	नारीवादी परिप्रेक्ष्य	127
खंड 3	**भारत में विकासात्मक शासनकाल**	**143**
इकाई 10	पूंजीवाद, समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था	145
इकाई 11	स्वतंत्रता के रूप में विकास	162
खंड 4	**विकास कार्यान्वयन (प्रैक्सिस) के मुद्दे**	**175**
इकाई 12	विकास, प्रवासन और विस्थापन	177
इकाई 13	आजीविका और स्थिरता	189
इकाई 14	जमीनी स्तर पर पहल	203

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

प्रस्तावना

पाठ्यक्रम विकासः पुनर्विचार विकास के विचारों की समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से जांच करता है। यह छात्रों को विकास बोध के विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचय करवाता है तथा अंतःविषय दृष्टिकोण से विकास के साथ भारतीय अनुभव के प्रक्षेपवक्र का पता लगाता है। पाठ्यक्रम को चार विषयों में विभाजित किया गया है जिसे हम खण्ड कहते हैं। प्रत्येक खण्ड विकास के कुछ पहलुओं को संबोधित करता है। खण्ड 1 विकास पुनरावलोकन में दो इकाईयां हैं। इकाई 1 में हमने विकास, अर्थ और विकास की परिभाषा और विकास के आयामों से संबंधित धारणाओं पर चर्चा की। इकाई 2 विकास के कारक और साधन में, हमने आर्थिक कारकों, राजनीतिक कारकों, सामाजिक संरचनात्मक कारकों, धार्मिक कारकों, तकनीकी कारकों जैसे विकास के कारकों पर चर्चा की है और जीएनपी, प्रति व्यक्ति आय, गरीबी, बुनियादी जरूरत दृष्टिकोण और मानव विकास सूचकांक जैसे विकास के साधनों पर भी चर्चा की है। इकाई 3 में, हमने विकसित, विकासशील और अविकसित के संदर्भ में देशों के वर्गीकरण पर चर्चा की।

खण्ड 2 विकास सिद्धांत के विभिन्न सिद्धांतों से संबंधित है। इकाई 4 में, हमने विकास की प्रक्रिया के रूप में आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण और नगरीकरण पर चर्चा की। इकाई 5 विकास के परिप्रेक्ष्य में, हमने विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों अर्थात् आधुनिकीकरण सिद्धांत, विकास और अविकसित के मार्क्सवादी और नव–मार्क्सवादी दृष्टिकोण, नवउदारवादी दृष्टिकोण, वैकल्पिक विकास, मानव विकास और विकास विरोधी पर चर्चा की। इकाई 6 में, हमने वैश्विक प्रणाली सिद्धांत पर चर्चा की। वैश्विक प्रणाली सिद्धांत को एक अमेरिकी समाजशास्त्री और आर्थिक इतिहासकार, इमैनुएल वालरस्टीन (1930–2019) ने 1970 के दशक की शुरुआत में एक वृहद समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के रूप में विकसित किया था, जिसने''पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था'' की गतिशीलता को ''कुल सामाजिक प्रणाली'' के रूप में समझाने की कोशिश की। ''(मार्टिनेज–वेला 2001)। वॉलरस्टीन की कृतियाँ विश्व पूँजीवादी प्रणाली का उदय और भविष्य की माँगः तुलनात्मक विश्लेषण के लिए अवधारणाएँ और आधुनिक विश्व प्रणाली पूँजीवादी कृषि और 1974 में प्रकाशित सोलहवीं शताब्दी में यूरोपीय विश्व–अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति, दोनों को सबसे व्यापक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं विश्व–प्रणाली सिद्धांत। भाग 6.2 विकास के आधुनिकीकरण प्रतिमान के लिए एक दृष्टिकोण के रूप में विश्व प्रणाली सिद्धांत की उत्पत्ति पर केंद्रित है। भाग 6.4 विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति का विवरण प्रदान करता है। यह बताता है कि इतिहास के माध्यम से दुनिया के कुछ ऐसे देश थे जो अपनी बेहतर आर्थिक स्थिति के कारण प्रभावी हुए थे और ये अन्य देशों पर हावी और षोषित थे। भाग 6.5 में विश्व–प्रणाली के सिद्धांत की कुछ आलोचनाओं की जांच की गई है। यह देखा गया है कि विभिन्न आधारों पर आलोचनाएँ होने के बावजूद, सिद्धांत पूंजीवाद के उदय और विस्तार का अत्यंत समृद्ध और उत्तम विश्लेषण है।

इकाई 7 में, हमने मानव विकास के परिप्रेक्ष्य पर चर्चा की। हमने विकास नैतिकता का पता लगाया और नीति निर्माताओं द्वारा विकास नीति के निर्माण, निहितार्थ और विकास नीति के परिणामों को मूल्य निर्णय द्वारा कैसे प्रभावित करते हैं। हमने समझा कि अतीत में आर्थिक विकास को आर्थिक विकास के संदर्भ में मापा जाता था जबकि मानव विकास को मानव के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के संदर्भ में देखा जाता है। मानव विकास का दृष्टिकोण लोगों को सबसे पहले रखता है और उनकी क्षमता को बढ़ाने की दिशा में काम करता है। हालांकि, मानव विकास का दृष्टिकोण निरंतर आर्थिक विकास को बाहर नहीं करता है। सैद्धांतिक

आधार मानव विकास दृष्टिकोण विकास के लिए समर्थता–दृष्टिकोण रहा है। इकाई 8 में हम पर्यावरण और उसके संबंधित पहलुओं को समझते हैं कि पर्यावरण क्या है और इससे क्या बनता है। फिर हमने इस बात पर चर्चा किया है कि मानव क्रिया और अंतः क्रिया के कारण पर्यावरण में क्या और क्या परिवर्तन हो रहा है। अगले भाग में विकास और पर्यावरण विमर्श पर चर्चा की गयी है तथा उसके बाद पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य पर चर्चा किया गया है। इकाई 8 में नारीवादी परिप्रेक्ष्य का चर्चा की गयी है। महिलाओं ने हमेशा सामाजिक आर्थिक के साथ–साथ समाज के राजनीतिक विकास में प्रत्यक्ष या अदृश्य योगदान दिया है। अभी भी विकास नीतियों विधानों और रणनीतियों में प्रत्यक्ष लाभार्थियों के रूप में महिलाओं की हमेशा उपेक्षा की है। इस तथ्य ने आंदोलन के विभिन्न दृश्यों में नारीवादी समर्थकों का ध्यान आकर्षित किया तथा आलोचना को आमंत्रित किया है। दूसरी ओर नारीवादियों ने विकास के विभिन्न वैकल्पिक मॉडल सुझाए हैं, जिससे महिलाओं को विकास नीतियों के मद्देनजर लाया जा सके। 1970 के दशक के आरंभ में, नारीवादियों ने महिलाओं और विकास के प्रतिच्छेदन पर काम किया तथा उनके प्रयासों के कारण, इन दोनों प्रभावित करने वाले कारकों के मध्य संवाद में तीव्रता दृष्टिगत हुई है। हालाँकि दुनिया भर की महिलाओं के सामाजिक–भौगोलिक स्थानों के विषय में निरपेक्ष विचार से उनके समक्ष विकास नीतियों के लाभ को समान रूप से प्रसारित करने के लिए अभी भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।

खण्ड–4 भारत में विकासात्मक षासन–काल से संबंधित है। इकाई 10 पूंजीवाद, समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था से संबंधित है। हम सामाजिक विकास पर वर्तमान विचारों का वर्णन करते हैं, जिसमें विकास की तीन दुनिया' पर चर्चा और सामाजिक विकास के लिए कुछ हालिया दृष्टिकोण शामिल हैं। अंत में, हम भारत के विकास के 'मिश्रित' मार्ग को देखते हैं। जिनमें भारत शामिल है। इकाई 11 में अमर्त्य सेन के विकास के सिद्धांत को स्वतंत्रता के रूप में सविस्तार प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता के रूप में विकास एक एजेंट–उन्मुख दृष्टिकोण है, जो व्यक्तिगत क्षमता और अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करता है। स्वतंत्रता केंद्रित दृष्टिकोण विकास के लिए एक गुणात्मक समझ प्रदान करता है। यह विकास को एक सामाजिक चर के रूप में अर्थशास्त्र के दायरे से परे देखने की अनुमति देता है। स्वतंत्रता को कई रूपों में चित्रित किया गया है, जो मौलिक क्षमताओं तथा यांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में विकास के लिए परिणाम व साधन दोनों के रूप में प्रकट होते हैं।

स्वतंत्रता के रूप में विकास महिलाओं के कल्याण तथा समुचित विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए महत्वपूर्ण तरीके से प्रेरित करता है। ऐसा करने में यह महिलाओं और विकास के बीच के संबंध पर ध्यान केंद्रित करता है, क्योंकि उनके एजेंट होने के कारण तर्कपूर्ण विकल्प और पात्रता साथ में संपन्न होते हैं। इसके विपरीत, हकदारी तथा एजेंसी की अनुपस्थिति उनकी अधीनता की परिस्थितियों को दर्शाती है।

स्वतंत्रता केंद्रित परिप्रेक्ष्य विकास के प्रयोग में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह विभिन्न मूल्यपरक सूचकांक तथा विकास पर अधिग्रहण करने के उपायों के लिए एक मार्गदर्शक शक्ति रहा है।

खण्ड 4, विकास के कार्यान्वयन में मुद्दे के इकाई 12 में विकास, प्रवासन और विस्थापन पर चर्चा किया है। इकाई 13 में, हमने आजीविका और स्थिरता के मुद्दों पर ध्यान दिया। आजीविका और स्थिरता के बुनियादी मुद्दों पर चर्चा किए बिना विकास पर बहस अधूरी है। इसमें विभिन्न संबंधित पहलुओं पर भी तथा वे विकास के प्रैक्सिस मुद्दों के रूप में कैसे प्रासंगिक चर्चा की गई है।

इकाई 14 में, हमने समावेशी विकास की प्रक्रिया तथा विकास की प्रक्रिया में जमीनी पहलों की प्रासंगिकता पर चर्चा किया गया है। हमने राज्य के संस्थानों के साथ जमीनी स्तर पर नवाचारों और उनके संबंधों के विभिन्न पहलुओं को देखा है। फिर, हमने विभिन्न समूहों/संगठनों और सरकार द्वारा विभिन्न हाशिए की श्रेणियों और समूहों के लिए चलाए जा रहे जमीनी स्तर पर शुरू किये गये विभिन्न कार्यक्रमों 'जैसे, NAZDEEK, SEWA, SAHAYOG और मनरेगा, MSME योजनाओं के बारे में विस्तार स चर्चा किया गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 1 – विकास पुनरावलोकन

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 विकास बोध*

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 विकास से संबंधित धारणाएँ

1.2.1 उद्विकास और प्रगति

1.2.2 वृद्धि, परिवर्तन और आधुनिकीकरण

1.3 विकासः संकल्पनात्मक ढाँचा

1.3.1 विकास का अर्थ

1.3.2 विकास की परिभाषा

1.4 विकास के आयाम

1.4.1 आर्थिक विकास

1.4.2 सामाजिक विकास

1.4.3 मानव विकास

1.4.4 सतत विकास

1.4.5 क्षेत्रीय विकास

1.4.6 समावेशी विकास

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 उपयोगी पुस्तकें

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप समझ पाएंगेः

- उद्विकास, प्रगति और वृद्धि, परिवर्तन और आधुनिकीकरण के बीच अंतर का
- विकास का अर्थ और परिभाषा को और
- विकास के आयामों का वर्णन करना;

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम खंड 1.2 में पहले विकास से संबंधित धारणाओं पर चर्चा करेंगे, खंड 1.3 में हम विकास के अर्थ और परिभाषा पर चर्चा करेंगे और खंड 1.4 में हम विकास के आयामों पर चर्चा करेंगे।

विकास को समझने में बहुत सी अस्पष्टताएँ शामिल हैं, जो कि अत्यंत जटिल हैं आगे जा कर प्रमुख उदारवादी विचारधाराओं द्वारा निर्देशित होती हैं। विकास की प्रक्रिया जटिल,

*प्रो. बी.बी. मल्लिक द्वारा लिखित।

बहुआयामी है और समाज में विभिन्न वर्गों और समुदायों के लिए असमान परिणाम लाती है। इसलिए, विकास और इसकी प्रक्रियाओं को समझने के लिए सामाजिक–राजनीतिक और सांस्कृतिक ढांचे से जुड़े वृद्धि, विकास और समृद्धि से संबंधित शिक्षाशास्त्र और विचारधारा की समझ की आवश्यकता होती है। विकास की समझ हासिल करने के दूसरे तरीके में विकास की घटनाओं को मापने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों, एजेंसियों और निकायों द्वारा उपयोग किए जाने वाले संकेतकों की आवश्यकता होती है। ऐसे संकेतकों को विकास संकेतक के रूप में माना जा सकता है। यह एक आदर्श विकास है, जो की सुधार, प्रगति, आधुनिकीकरण, परिवर्तन और विकास के लगभग समानार्थी मानक हैं। विकास का संबंध बेहतर जीवन की प्राप्ति से है और इसलिए विकास विश्लेषण में लोगों के जीवन की गुणवत्ता और उनके जीवन जीने के तरीके को शामिल किया जाता है। जीवन की गुणवत्ता जीवन की दीर्घायु, अपेक्षा, नागरिक सुविधाओं के साथ जीवन स्तर, घरेलू संपत्ति, पौष्टिक भोजन आदि से मापी जाती हैं। इन सभी विशेषताओं में विकास संबंधी विचारधारा, के रूबरू विकास की धारणा, सिद्धांत और कार्यान्वयन की बारीकियाँ शामिल है। समसामयिक सम्भाषण और संवाद में, विकास को स्वतंत्रता, क्षमता और लोकतंत्र के रूप में समझा जाता है। "लोकतंत्र और विकास मूलभूत रूप से अंतर्संबंधित है, ये आपस में जुड़े हैं... क्योंकि लोकतंत्र एक मौलिक मानवाधिकार है, जो प्रगति एवं विकास का एक महत्वपूर्ण मापक है। वे विकास के मूल सिद्धांत से जुड़े हुए हैं क्योंकि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में लोगों की भागीदारी, जो उनके जीवन को प्रभावित करती है, मुख्य रूप से शामिल है" (संयुक्त राष्ट्र 1994, अनुच्छेद 120)।

अब हम विकास की संबंधित धारणाओं पर चर्चा करते हैं।

1.2 विकास से संबंधित धारणाएँ

जैसा कि हम ''विकास'' की धारणा को समझने के लिए आगे बढ़ते हैं, हमारा कई संबंधित धारणाओं से सामना होता है,जैसे उद्विकास, प्रगति, वृद्धि, परिवर्तन इत्यादि। इसलिए, यह आवश्यक है कि हमें इन सभी धारणाओं या अवधारणाओं के बारे में बहुत शुरुआत से ही समझ होनी चाहिए, भले ही इनका परस्पर उपयोग करने की प्रवृत्ति हो।

1.2.1 उद्विकास और प्रगति

उद्विकास की धारणा लैटिन शब्द 'evolvere' (इवोल्वेर) से ली गई है। इसका अर्थ 'विकसित होना' या प्रकट करना है। उद्विकास की अवधारणा को विशेष रूप से पौधों, जानवरों आदि के जीवों की आंतरिक वृद्धि के अर्थ के लिए लागू किया जाता है। इसके अलावा, उद्विकास के विभिन्न चरणों के माध्यम से आंतरिक विकास को भी देखा गया है। हेबर्ट स्पेंसर ने बताया कि सामाजिक उद्विकास सरल से जटिल तक होने में कई वर्षों का समय लगा।

एक ओर प्रगति की धारणा, आगे बढ़ने के लिए अभिप्रेत है। प्रगति का मूल अर्थ है, आगे की ओर अग्रसर या वांछनीय छोर की ओर अग्रसर होना। वांछनीय छोर के रूप में कई प्रकार की प्रगति हो सकती है। यह एक मूल्य युक्त अवधारणा है। मॉर्गन, कॉम्टे, स्पेंसर, मार्क्स, दुर्खीम, वेबर और कई अन्य लोगों ने अपने भव्य विचारों के माध्यम से मानव समाज के विकास और प्रगति के विभिन्न चरणों का विश्लेषण किया। अब हम वृद्धि, परिवर्तन और विकास के बीच अंतर समझते हैं।

1.2.2 वृद्धि, परिवर्तन और आधुनिकीकरण

इस भाग में हम विकास के विभिन्न अर्थों के बारे में चर्चा करेंगे, जैसा कि आम तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में माना जाता है। हम समाज में विकास की इन धारणाओं के प्रभाव पर भी संक्षेप में चर्चा करेंगे।

बहुल लक्ष्यार्थों के रूप में विकासः

विकास के कई अर्थ हैं जैसे – वृद्धि, परिवर्तन के रूप में विकास या रुपांतरण के रूप में विकास और आधुनिकीकरण के रूप में विकास।

क) वृद्धि :

आर्थिक संदर्भ में, वृद्धि के रूप में विकास निम्नलिखित को संदर्भित करता है

i) उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन करने की बढ़ी हुई क्षमता, और उपभोग के पैटर्न में एक सहवर्ती वृद्धि;

ii) भोजन, वस्त्र, आश्रय, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा की बुनियादी मानवीय जरूरतों को पूरा करने की क्षमता में वृद्धि;

iii) संभावनाओं के विस्तार के रूप में, व्यक्तिगत विकल्पों, क्षमताओं और कामकाज में वृद्धि।

ख) परिवर्तन और रुपांतरणः

समाज में किसी भी प्रकार के बदलाव को परिवर्तन के रूप में जाना जाता है। परिवर्तन मूल्य तटस्थ अवधारणा है जबकि विकास मूल्य–युक्त अवधारणा है। विकास की धारणा, दूसरे शब्दों में, वांछित परिवर्तन की प्रक्रिया है। परिवर्तन और रुपांतरण के रूप में विकास मानव समाजों में परिवर्तन की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं को प्रदर्शित करता है।

ग) आधुनिकीकरणः

अक्सर आधुनिकीकरण को विकास के साधन के रूप में देखा जा रहा है। आर्थिक क्षेत्र में यह औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और कृषि के तकनीकी परिवर्तन की प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है। राजनीतिक क्षेत्र में, इसे सामान्य रूप से प्राधिकरण के युक्तिकरण और विशेष रूप से एक तर्कसंगत नौकरशाही की आवश्यकता होती है। सामाजिक क्षेत्र में यह अभेद्य संबंधों के कमजोर पड़ने और उन्नति में व्यक्तिगत उपलब्धि की प्रधानता से चिह्नित है, और सांस्कृतिक क्षेत्र में यह विज्ञान और धर्मनिरपेक्षता की वृद्धि के साथ–साथ साक्षर आबादी का विस्तार है जो कि दुनिया से ''विरक्ति या मोह भंग होने के'' के रूप में जाना जाता है (मार्लिन 1990)।

जैसाकि विकास को मुख्य रूप से उत्पादकता में वृद्धि, आर्थिक समृद्धि और बाजार अर्थव्यवस्था के विस्तार के रूप में परिभाषित किया गया था। अल्पविकास का निर्माण गरीबी, कम उत्पादकता और पिछड़ेपन की घटनाओं के रूप में किया गया था। ऐसी आशा थी कि आर्थिक विकास विकास का सबसे तेज जरिया था। इसलिए,1950 के दशक से, औद्योगीकरण और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) के विकास पर एक जुनूनी ध्यान केंद्रित किया गया है। यह माना गया है कि तेजी से होने वाले राष्ट्रीय परिणाम मौजूदा सामाजिक परिस्थितियों में सकारात्मक बदलाव लाएंगे। हालांकि, इस विकास के लिए कई प्रतिकूल परिणाम थे। यह

चिंता, अलगाव, विखंडन, निंदक नियतिवाद का भी कारण बनता है। हमें अशिक्षा, बेरोजगारी, उत्पादक संपत्तियों की कमी और ज्ञान की कमी के कारण लोगों द्वारा महसूस की जाने वाली शक्तिहीनता को दूर करने के लिए विकास की आवश्यकता है।

उपरोक्त चर्चा से हम यह कह सकते हैं कि विकास का वित्तीय सन्तुलन विवरण बहुत आशावादी नहीं हो सकता है, फिर भी यह गरीबी और पिछड़ेपन की लंबे समय से चली आ रही मानव समस्याओं को दूर करने का एकमात्र संभावना रखता है।

1.3 विकासः संकल्पनात्मक ढाँचा

विकास, आर्थिक वृद्धि के रूप में कल्पित की गई, एक सर्व–समावेशी घटना है। इसके मात्रात्मक परिणाम काफी हद तक गुणात्मक और व्याख्यात्मक हैं। उदाहरण के लिए, यदि हम स्वयं को पूरी तरह से विकास की अर्थव्यवस्था तक सीमित कर देते हैं, तो यह आगे यह भी न्याय संगत सिद्ध कर सकता है कि आर्थिक विकास से बढ़ कर है और कई सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव वाले सामाजिक परिणामों के लिए अग्रणी है। हालांकि, आर्थिक विकास उत्पादन और रोजगार की संरचना में गुणात्मक परिवर्तन के साथ विकास को संदर्भित करता है, जिसे आमतौर पर संरचनात्मक परिवर्तन के रूप में संदर्भित किया जाता है (कुजनेट्स,1966)। दूसरे शब्दों में, गतिशील औद्योगिक क्षेत्र, राष्ट्रीय उत्पादन, रोजगार के हिस्से में विकासशील अर्थव्यवस्था का योगदान और बढ़ जाता है और कृषि का हिस्सा घट जाता है। यह बताता है कि आर्थिक वृद्धि बिना किसी आर्थिक विकास के हो सकती है। इसी तरह पिछले कुछ दशकों में विकास हुआ है। यदि हम संकीर्ण अर्थों में विकास का विश्लेषण करते हैं तो हम कह सकते हैं कि शुरू में विकास अर्थव्यवस्था, समाज के आधुनिकीकरण और रोजगार प्रदान करके अपनी आय बढ़ाने की प्रक्रिया का उपयोग करने के बारे में है। इसलिए, संक्षेप में, विकास का अर्थ दुनिया के गरीब लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार से है ताकि इन लोगों की संपत्ति, स्वास्थ्य, दीर्घायु और शिक्षा पूरे देश में बेहतर स्थिति में रहने वाले लोगों के साथ मिल सके। इसलिए, विकास केवल आर्थिक परिवर्तन से कही अधिक है और यह विशुद्ध रूप से आर्थिक घटना नहीं है; बल्कि एक न्यायसंगत, समतावादी और लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुनिश्चित करने की दिशा में संपूर्ण रूप से आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था के युक्तिकरण, पुनर्गठन और पुनर्संरचना से जुड़ी एक समावेशी बहु आयामी प्रक्रिया है।

आगे यह स्वीकार करते हुए कि विकास एक प्रतिमानात्मक अवधारणा है, डडले सीर्स (1972: 22) जो, विकास अध्ययन के संस्थापक पिता हैं, ने यह बताया कि विकास एक सुसंगत प्रक्रिया है; जो ''मानव व्यक्तित्व की क्षमता का बोध कराता है''। उन्होंने तदनुसार अपने समय की प्रचलित धारणा को चुनौती दी कि मात्र आर्थिक वृद्धि ही विकास है। इसलिए, उन्होंने व्यापक व्याख्यात्मक ढांचे के लिए तर्क दिया और तीन अन्योन्याश्रित संकेतकों : गरीबी, बेरोजगारी और असमानता के महत्त्व पर जोर दिया।

लेसोथो फर्ग्यूसन (1990) ने विकास के विमर्श और परिपाटी में अनैतिहासिक और गैरराजनीतिक स्वभाव को प्रदर्शित किया है। उनका काम विकासोत्तर और उपनिवेशवाद के बाद के सिद्धांतकारों का प्रतीक है। उनका तर्क है कि गैर पश्चिमी देशों के बारे में बात करने और विशिष्टताओं उनका प्रतिनिधित्व करने के ''पश्चिमी'' तरीकों की कुछ को लोगों और स्थानों के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान के बजाय वैचारिक अनुमानों के रूप में समझा जाना चाहिए। इसलिए इन सिद्धांतकारों के विचारों और योगदानों में, विकास की कल्पना और प्रतिनिधित्व

करने के तरीके उत्तरी विकास एजेंसियों के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं। यह दुनिया के बाकी हिस्सों के लोगों की तुलना में उत्तर की स्व–पुष्टि करने वाली विचारधाराओं के बारे में अधिक खुलासा करता है। इस संबंध में, हाल के दशकों के विकासोत्तर विद्वानों ने विशेष रूप से इस स्थिति को माना है कि विकास का संबंध मानव सुधार के साथ कम और मानव नियंत्रण और वर्चस्व के साथ अधिक है। इसके विपरीत, एस्टेवा (1991) विकास के अस्थायीपन का एक संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाता है। वह इसे संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में अपने उभरते आधिपत्य को मजबूत करने के प्रयास की एक परियोजना के रूप में चित्रित कर रहा है। इसके कारण हम किन परिस्थितियों में पहुंचते हैं? फर्ग्यूसन (1994) की हिदायत से हम दो प्रमुख प्रश्नों : ''क्या किया जाना है?'' और "किसके द्वारा?" के उत्तर खोजने में सक्षम होते हैं। इस तरह से और इन श्रेणियों में, विभिन्न विचार धाराओं को विकास के बहुत सुसंगत अर्थ और व्यापक वांछनीयता के लिए संघर्ष करना चाहिए।

1.3.1 विकास का अर्थ

''विकास'' शब्द का शब्दकोशीय अर्थ कुछ विचारों की ओर संकेत करता है जैसे, 'प्रकट करना', 'वृद्धि', 'किसी भी चीज के विवरण पर पूर्णतया काम करने वाला', और 'किसी चीज में अव्यक्त क्षमता को बाहर निकालना, जिसे विकसित करने की आवश्यकता हो'। ये धारणाएं और विचार विकास की अवधारणा को समझने के लिए प्रासंगिक हैं। जो इसके अलावा, पिछली आधी शताब्दी से अधिक समय से एक सार्वजनिक नीति के रूप में विकास, औद्योगीकरण और औद्योगीकृत देशों में और पूर्ववर्ती कालोनियों के ''परिधि'' में आया है, जिन्हें ''कम विकसित देशों'' (एलडीसी) के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसे ''तीसरी दुनिया'' (थर्ड वर्ल्ड) कहा गया है (तीसरी दुनिया के विचार ने जनसाधारण का जिक्र करते हुए फ्रेंच टायर्स, या ''थर्ड इस्टेट'' के कथनों को सामने रखा, और उन ''लोगों'' के विचार को विश्व स्तर पर निहित किया – जो औपनिवेशिक शासन से उत्पीड़ित थे)।

विकास निस्संदेह एक बहुत बड़ा, विशाल और सामान्य शब्दावली है। यह भौतिक के साथ–साथ गैर–भौतिक चीजों का एक संलयन है, जिसमें एक ही समय में सबको एक साथ मिलाया गया है। आंशिक, पूर्वाग्रही और समस्याग्रस्तताओं के बावजूद, विकास की प्रक्रिया हमेशा चक्रीय, रैखिक और सतत् होती है। हालाँकि, विकास के सटीक या संक्षिप्त अर्थ के रूप में अभी तक सर्वसम्मति से समाजों के पार खींचा या समझा नहीं जा सका है; कोई भी समाज विकास के प्रतिमानों से बच नहीं पाया है। विकास परिलक्षण का पता लगाने के लिए किसी समाज के वर्गीकरण या श्रेणीकरण की बजाय, हर कोई यह मानने के लिए खयाली रूप से बढ़ा चढ़ा कर प्रचार करता है कि विकास का अर्थ असामान्य उत्पादन है। तदनुसार, एक सूक्ष्म दृष्टिकोण से, विकास के फल केवल तभी प्राप्त होते हैं और महसूस किए जाते हैं जब यह पर्याप्त रूप से सब कुछ शामिल करता है। उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि हालाँकि विकास शुरू में केवल आर्थिक विकास के रूप में शुरू हुआ था, लेकिन विद्वानों ने विकास को व्यापक बनाने के लिए विभिन्न और बहुआयामी विश्लेषणों को शामिल किया। इसलिए, विकास को सामाजिक क्षेत्र के धरातल पर उतारना होगा ना कि उससे अलग थलग रहना होगा। इसलिए, विकास को सामाजिक विकास के रूप में परिभाषित और वर्णित किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में 'सामाजिक' का अर्थ है कि विकास लोगों के जीवन, उनके संगठन, कार्यों में कैसे बदलाव लाता है; और विभिन्न समुदायों पर इसका प्रभाव और इसे मापने के लिए संकेतक इत्यादि में क्या परिवर्तन लाता है। इस तरीके से, विकास का अर्थ पूर्ण और परिपक्व होने के लिए, खुद को प्रकट करना है। इसलिए विकास लोगों के जीवन

की गुणवत्ता, उनकी रहने की स्थिति, भौतिक कब्जे और कई अन्य अति और गुप्त कारकों में निरंतर प्रगतिशील सुधार को इंगित करता है।

1.3.2 विकास की परिभाषा

गुन्नार मिर्डल ने विकास की अवधारणा का बहुत विस्तार से वर्णन किया। उनके अनुसार 'विकास से मेरा अर्थ है कि पूरे सामाजिक व्यवस्था को ऊपर की ओर बढ़ना, और मैं विश्वास करता हूँ कि यह केवल तार्किक रूप से स्थिर परिभाषा है'। यह सामाजिक प्रणाली तथाकथित आर्थिक कारकों, सभी गैर–आर्थिक कारकों के अलावा लोगों के विभिन्न समूहों द्वारा सभी प्रकार के खपत को शामिल करता है; खपत सामूहिक रूप से प्रदान की जाती है; शैक्षिक और स्वास्थ्य सुविधाएं और स्तर; समाज में शक्ति का वितरण; और अधिक आम तौर पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तरीकरण; मोटे तौर पर बोला जाए तो, संस्थान और दृष्टिकोण – इनमें से एक या कई अंतर्जात कारकों को बदलने के लिए लागू किए गए कारकों से प्रेरित नीतिगत उपायों के बहिर्जात समूह के रूप में हमें जोड़ना चाहिए।' (मिर्डल 1974: 729–30)।

पेरोक्स व्यवहार और मानसिक दोनों परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करता है जो उसके लिए विकास और उत्पादन बढ़ाने की शर्तें हैं। इसके अलावा, वह विकास को ''आबादी के बीच मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों के संयोजन के रूप में लिखते हैं जो अपने वास्तविक और वैश्विक उत्पादों, संचयी और टिकाऊ तरीके से बढ़ाने का निर्णय लेते हैं'' (1978:65)।

टोडारो विकास को एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में वर्णित करता है, जिसमें संपूर्ण आर्थिक और सामाजिक प्रणालियों के पुनर्गठन और पुनर्संयोजन शामिल है। उनका तर्क है कि विकास एक भौतिक वास्तविकता है और मन की वह स्थिति है जिसमें समाज ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रिया के कुछ संयोजनों के माध्यम से बेहतर जीवन प्राप्त करने का तरीका हासिल किया है। यह है:

(i) लोगों के जीवन स्तर को यानी आय और खपत, भोजन के स्तर, चिकित्सा सेवाएं, शिक्षा आदि को प्रासंगिक विकास प्रक्रियाओं के माध्यम से अपर उठाना है;

(ii) सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों और संस्थानों की स्थापना के माध्यम से लोगों के आत्मसम्मान के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना जो मानवीय गरिमा और सम्मान को बढ़ावा देते हैं; और

(iii) लोगों की पसंद की वस्तुओं को चुनने की स्वतंत्रता बढ़ाने के लिए, उदाहरण के लिए माल और सेवाओं की किस्में (1981: 56)।

रोजर्स लिखते हैं ''विकास समाज में सामाजिक परिवर्तन की एक लंबी भागीदारी वाली प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य अपने पर्यावरण की बेहतर समझ के माध्यम से अधिकांश आबादी के लिए सामग्री और सामाजिक प्रगति है'' (1990: 30)।

जैसा कि सिजरमई ने बताया है कि विकास को समझने के दो विशिष्ट तरीके हैं:

(i) एक अवस्था या स्थिति के रूप में विकास जो स्थिर है और

(ii) एक प्रक्रिया गतिशील परिवर्तन के क्रम के रूप में विकास है।

विकास के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण अधिक अलग है। व्यक्ति यह समझने की कोशिश

करता है कि आखिर क्यों, लंबे समय में, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विकास में इतना बड़ा अंतर आया (स्जिम्मई, 1993)।

अमर्त्य सेन (1999) के अनुसार 'विकास नागरिकों की क्षमताओं के विस्तार और एक नागरिक और व्यक्ति के रूप में उनके अधिकारों को पूरा करने के बारे में है। इसके अलावा, इसके लिए उन नागरिकों की पहुँच और अवसरों को बढ़ाने की आवश्यकता है, जिनके पास उसकी अहमियत का कारण हैं।' उनका दृष्टिकोण स्वतंत्रता की हिमायत करके क्षमताओं में वृद्धि पर आधारित है, जैसेः आर्थिक अवसर, राजनीतिक स्वतंत्रता, सामाजिक सुविधाएं, पारदर्शिता की गारंटी और सुरक्षात्मक सुरक्षा। उन्होंने यह तर्क दिया कि, इन सबको आपस में जोड़ने की जरूरत है। सामाजिक सुविधाओं में राज्य और बाजार जैसे संस्थान शामिल हैं। सामाजिक व्यवस्थाओं को उनके व्यक्तियों की मूल स्वतंत्रता को बढ़ाने उसकी गारंटी देने में योगदान की जांच, और परिवर्तन के सक्रिय अभिकर्ताओं के रूप में देखा जाए, ना कि एक निष्क्रिय लाभ के प्राप्तकर्ता के रूप में (सेन 1999ः xii)। सामाजिक सुविधाओं को ऐसे अवसर प्रदान करने का प्रयत्न करना चाहिए जो जनसंख्या की भलाई में वृद्धि करें। वह कहते हैं कि सभी मनुष्य समान रूप से उस जीवन का आनंद लेने के हकदार हैं जिसकी अहमियत वे जानते हैं। अगर सभी के लिए स्वतंत्रता का प्रयत्न करना कि लोगों को किस चीज का अभाव है; नागरिकों की क्षमताओं के विस्तार के बारे में है, तो इस बात पर विशेषतः ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए (रीड–हेनरी 2012)। 'विकास में विभिन्न प्रकार की बाधाओं को हटाना शामिल है जो लोगों की चुनाव को स्वतंत्रा को सीमित करती हैं और उन्हें सीमित अवसर प्रदान करते हैं' (सेन 1999ः xii)। इसके अलावा वे तर्क देते हैं प्रमुख कारकों जो स्वतंत्रता को "गरीबी के साथ–साथ अत्याचार, खराब आर्थिक अवसरों के साथ–साथ व्यवस्थित सामाजिक अभाव, सार्वजनिक सुविधाओं की उपेक्षा के साथ–साथ असहिष्णुता या दमनकारी राज्यों की गतिविधि पर सीमित करते हैं"(सेन 1999ः 1), इन प्रमुख कारकों को हटाने पर जोर देते हैं। 2000 के दशक की शुरुआत में सेन के काम का एक नए प्रतिमान की स्थापना पर बहुत प्रभाव पड़ा। विकास को ''ऐसे संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया गया, जिसमें मानवाधिकारों को एक संवैधानिक भाग के रूप में शामिल किया गया हैः सामाजिक परिवर्तन की सभी सार्थक प्रक्रियाएं एक साथ अधिकार–आधारित और आर्थिक रूप से आधारभूत हैं, और उन शर्तों की कल्पना की जानी चाहिए'' (यूविन 2010ः 168)। सेन की क्षमता दृष्टिकोण धनी लोगों के विश्व–दृष्टिकोण को चुनौती देता है। वह शकालू अर्थशास्त्रियों को यह समझाने में सफल होता है कि सामाजिक पसंद और सार्वजनिक चर्चा दोनों संभव और आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विकास रणनीतियों के बारे में विकल्प लोकतांत्रिक होना चाहिए (इवांस 2012)। ''सेन ने समाज के निचले पायदान पर रहने वालों की भलाई पर ध्यान केंद्रित किया है, न कि शीर्ष पर रहने वालों की दक्षता पर।'' (लॉन्गवर्थ 1999)। वह अन्य विकास विचारकों द्वारा किए गए विचारों और निर्णयों को प्रभावित करता है। सहस्त्राब्दी विकास के लक्ष्य (मिलेनियम डेवलपमेंट गोल) को सेन के विचारों ने निर्देशित किया है।

थॉमस (2000) 'विकास' शब्द के तीन तरीकों की व्याख्या करता है। सबसे पहले, एक दृष्टि के रूप में विकास का अर्थ है कि यह समाज के लिए कितना वांछनीय है और समाज को वांछनीय दिशा में ले जाए। दूसरे, विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो समय की अवधि में सामाजिक परिवर्तन को बढ़ाती है। यह अपरिहार्य है और इसकी प्रक्रियाएं निरंतर हैं। उदाहरण के लिए, पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों प्रगति के अपरिहार्य परिणाम हैं जो विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया के उत्पाद हैं। तीसरा, क्रिया के रूप में विकास बदलाव लाने के लिए जानबूझकर किए गए प्रयासों पर केंद्रित होता है जो इसे बेहतर बनाते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान, विकास को परिभाषित करते हुए विकसित और विकासशील देशों में लोगों के जीवन में असमानता की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में इन वृहत्तर स्वतंत्रता (लार्जर फ्रीडम) (2005) नाम से गरीबों के अधिकारों और स्वतंत्रता पर जोर दिया। उनके लिए 'अन्योन्याश्रय की दुनिया सुरक्षित नहीं हो सकती या सिर्फ तब तक जब तक हर जगह के लोग लालसा और भय से मुक्त नहीं हो जाते और गरिमा से जीने में सक्षम होते हैं। आज, जैसा कि पहले कभी नहीं था, गरीबों के अधिकार अमीरों की तरह मौलिक अधिकार होते हैं, और उनमें से एक व्यापक समझ विकसित दुनिया की सुरक्षा के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि विकासशील दुनिया के लिए।'(अन्नान 2005)।

पॉल स्ट्रीटन ने मानव विकास सूचकांक पर चर्चा करते हुए लिखा है कि 'पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य को देखने वाला दृष्टिकोण अपने आप में समाप्त हो जाता है... उन परियोजनाओं के लिए तर्क देंगे जो पोषण,शिक्षा और स्वास्थ्य को तब भी बढ़ाते हैं... जब निवेशों की पारंपरिक रूप से मापी गई दरें शून्य हो जाती हैं और यह दृष्टिकोण लोगों द्वारा स्वतंत्रता के आह्वान को अनिवार्य रूप से आगे बढ़ाता है' (स्ट्रीटन 2009: 234–36)।

ये उपरोक्त परिभाषाएँ अपने समय, संस्कृति, स्थान और सीमा के परिणाम हैं। ये एक समग्र समझ प्रदान करते हैं कि विकास शब्द के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके विकास का क्या अर्थ है। अब हम विकास के आयामों पर चर्चा करते हैं।

बोध प्रश्न I

1. परिवर्तन और विकास के बीच अंतर करें।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

2. आर्थिक विकास समाज के सभी वर्गों के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एक पर्याप्त और आवश्यक शर्त है। सही विकल्प पर निशान लगाएं।

   हाँ नही

1.4 विकास के आयाम

सामान्य शब्दों में विकास का अर्थ है बदलती परिस्थितियों का एक नया चरण जिसे विभिन्न विषयों, रूपरेखा और दृष्टिकोणों में वर्गीकृत और विस्तृत किया जा सकता है। ये दृष्टिकोण और विषयगत आख्यान एक प्रमुख और आदर्शवादी संदर्भ पर केंद्रित हैं, जो किसी समूह या राष्ट्र या समुदाय के विकास के संदर्भ के एक ढाँचे में बैठ भी सकते हैं और नहीं भी। नीचे कुछ और महत्वपूर्ण आयामों पर चर्चा की गई है:

1.4.1 आर्थिक विकास

परंपरागत रूप से, आर्थिक विकास विकास का एक ऐसा प्रकार और रूप है जो ज्यादातर आर्थिक गतिविधियों और वृद्धि सिद्धांतों पर केंद्रित है। प्रति व्यक्ति आय, सकल घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि आर्थिक विकास और वृद्धि के संकेतक है। यह आर्थिक प्रणाली को बढ़ती गति और स्थिति में ले जाता है। वास्तव में, इस तरह से परिभाषित विकास को आर्थिक विकास प्रक्रिया के परिणाम के रूप में अधिक देखा जा सकता है; उदाहरण के लिए एक आर्थिक प्रणाली की संरचना का परिवर्तन। आर्थिक विकास को केवल आर्थिक कारक द्वारा नहीं समझाया जा सकता है, और विकास की अवधारणा में आर्थिक संकेतक में केवल परिवर्तन मात्र से कुछ अधिक शामिल हैं, हालांकि आर्थिक परिप्रेक्ष्य विकास के प्रमुख दृष्टिकोणों में से एक है।

1.4.2 सामाजिक विकास

विकास एक पृथक घटना नहीं है। इसे समाज के लिए और समाज में लोगों की बेहतरी के लिए होना चाहिए; इसलिए, विकास सामाजिक और समाजशास्त्रीय है। लेकिन विकास जो अन्यथा 'प्रकट करने या विकसित होने या परिपक्व होने' के रूप में माना जाता है, लोगों के जीवन स्तर और जीवन की गुणवत्ता में प्रगतिशील सुधार के लिए एक कार्य या प्रक्रिया का उल्लेख करता है। बिलांस के अनुसार, '1997 का सामाजिक विकास एक सतत् समाज का वर्धन है जो हाशिए पर रहने वाले समूहों, महिलाओं और पुरुषों को सशक्त बनाने, अपने विकास को शुरू करने, उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने और समाज में उनका सही स्थान हासिल करने के लिए मानवीय सम्मान के योग्य है।... यदि हम समाजशास्त्रीय अर्थों में विकास का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि विकास का समाजशास्त्र 19 वीं शताब्दी के विकास के सिद्धांतों का महत्वपूर्ण अनुक्रमिक है। यह 19 वीं शताब्दी के अंत से विचलन को अपनी उत्पत्ति का श्रेय देता है। विकास को कृषि से औद्योगिक स्थापित करने के लिए समस्याग्रस्त बदलाव के रूप में समझा जा सकता है। विकास और समानता के बीच एक करीबी रिश्ता है जैसे कि 'आर्थिक वृद्धि और सामाजिक विकास एक दूसरे पर लागू होते हैं, यानी व्यापक रूप से प्रभावी सामाजिक प्रगति सामाजिक रूप से उन्मुख आर्थिक और वित्त नीति के बिना संभव नहीं है'। सामाजिक विकास की गरीबी उन्मूलन महत्वपूर्ण लक्ष्य प्रमुख प्रवृत्ति रही है। विकासशील देशों में जनसाधारण के निम्न स्तर को विकास के प्रमुख मुद्दे के रूप में चुना जाता है।

1.4.3 मानव विकास

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के अनुसार मानव विकास लोगों की पसंद को विश्लेषित करने की एक प्रक्रिया है। सिद्धांत रूप में, ये विकल्प अनंत हो सकते हैं और समय के साथ बदल सकते हैं। लेकिन विकास के सभी स्तरों पर, लोगों के लिए तीन आवश्यक चीजें हैं (अ) एक लंबे और स्वस्थ जीवन का नेतृत्व करने के लिए, (ब) ज्ञान प्राप्त करने के लिए, और (स) एक सभ्य जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुंच के लिए। मानव का विकास यहीं समाप्त नहीं होता है। अतिरिक्त विकल्प, जो राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता से लेकर रचनात्मक और उत्पादक होने और व्यक्तिगत आत्मसम्मान का आनंद लेने और मानव अधिकारों की गारंटी देने के अवसर तक विस्तृत हैं, मानव विकास के अविभाज्य अंग हैं।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम मानव विकास के दो पक्षों को दर्शाता हैः अ) मानव क्षमताओं का निर्माण जैसे स्वास्थ्य, ज्ञान और संसाधनों तक पहुंच और ब) उत्पादक उद्देश्यों के लिए इन क्षमताओं का उपयोग करने वाले लोगों की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक मामलों में सक्रियता।

भारत मानव विकास रिपोर्ट, 1999 के अनुसार "मानव विकास लोगों के चुनावों विकल्पों को बढ़ाने की एक प्रक्रिया है। सबसे महत्वपूर्ण विकल्प जो लोगों को उपलब्ध होने चाहिये एक लंबा और स्वस्थ जीवन, ज्ञान और आय, संपत्ति और के एक सभ्य जीवन स्तर तक पहुंच शामिल होना चाहिए ... (लेकिन) मानव विकास की चिंता जैसे कि बेहतर स्वास्थ्य या ज्ञान के रूप में मानव क्षमताओं के गठन से ही अधिक है। यह इन क्षमताओं के उपयोग की भी चिंता करता है। मानव विकास के दृष्टिकोण के लिए प्रासंगिक विषय मानव पूंजी के बीच संबंधों की जांच करना है जो मानव केंद्रित विकास है, जहां लोगों के कल्याण और समाज के साथ उनके संबंधों को प्रभावित करने वाले विभिन्न आयामों के सुधार पर ध्यान दिया जाता है (स्वास्थ्य, शिक्षा, अधिकार, क्षमता, सशक्तिकरण आदि)। मानव पूंजी और विकास के बीच संबंधों पर उपर्युक्त जोर विकास की एक बहुआयामी अवधारणा की दिशा में एक कदम है, जहां ज्ञान केवल आर्थिक विकास के लिए आधार ही नहीं है, बल्कि एक अंत है, चूंकि यह सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और सामुदायिक और सामाजिक रिश्तों में एक सामान्य सुधार उत्पन्न करता है। आजकल विकास की अवधारणा में उपर्युक्त योग्यताओं में से एक से अधिक में शामिल तत्वों का एक समूह शामिल है।

1.4.4 सतत विकास

सतत विकास जो सामाजिक–आर्थिक प्रणाली के दीर्घकालिक दृष्टिकोण पर विचार करता है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि अल्पावधि में होने वाले सुधार भविष्य की स्थिति या प्रणाली की विकास क्षमता के लिए हानिकारक नहीं होंगे, अर्थात विकास पर्यावरण,वित्तीय और अन्य आधार पर समाज के लिए ''सतत'' होगा। ''सतत विकास'' की अवधारणा सबसे पहले ब्रुन्डलैंड (1987ः 12) द्वारा शुरू की गई थी, जो विकास को 'सतत' के रूप में परिभाषित करता है, अगर यह भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है'। सतत विकास से तात्पर्य है कि संपूर्ण संसाधनों का उपयोग कम से कम हो या कम से कम यह सुनिश्चित करना कि उनसे प्राप्त राजस्व का उपयोग पीढ़ियों भर में आय का एक निरंतर प्रवाह बनाने के लिए किया जाता है, और अक्षय संसाधनों का उचित उपयोग किया जाता है। यह ऊर्जा (विशेष रूप से तेल और तेल उत्पादों), मछली स्टॉक, वन्यजीव, वन, जल, भूमि और वायु के लिए भी लागू होता है। स्थिरता की अवधारणा को पर्यावरणीय चिंताओं से परे भी विस्तारित किया गया है, जिसमें सामाजिक स्थिरता, यानी दीर्घकालिक स्वीकृति और नागरिकों, उनके संगठनों और संघों (नागरिक समाज) द्वारा विकास परिवर्तनों का स्वामित्व, और वित्तीय और आर्थिक सततता शामिल है।

1.4.5 क्षेत्रीय विकास

विकास का यह आयाम एक क्षेत्रीय प्रणाली को दर्शाता है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच अंतर्संबंधों के एक समूह के रूप में होता है, जिसमें मानव गतिविधियों (वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और खपत, लेकिन सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के

लिए आकर्षण के ध्रुवों के अस्तित्व की विशेषता होती है।), और सूचना प्रणालियों और परिवहन बुनियादी सुविधाओं से जुड़ा हुआ है। क्षेत्र के विशिष्ट सामाजिक–आर्थिक, पर्यावरणीय और संस्थागत क्षमता और बाहरी क्षेत्रों के साथ इसके संबंधों का दोहन करके एक विशिष्ट क्षेत्र (स्थान) का क्षेत्रीय विकास किया जा सकता है।

1.4.6 समावेशी विकास

समावेशी विकास शब्द की अवधारणा को अब समाज के हाल के समय में विकासात्मक अध्ययन के संदर्भ में जोड़ा गया है। यह ठीक है कि जीवन स्तर में धीमी प्रगति और असमानता को व्यापक करने के कारण जिसकी वजह से पिछले साल (2017) के भविष्य के आर्थिक प्रगति के आकार को विश्व आर्थिक मंच प्रणाली की पहल ने एक नई आर्थिक नीति की रूपरेखा पेश की जिसे अन्यथा समावेशी विकास कहा जाता है। सभी के लिए उच्च जीवन स्तर को बढ़ावा देने के लिए विकास और विकास के अधिक समावेशी और सतत प्रतिमान पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ढांचा संरचनात्मक आर्थिक नीति और संस्थागत ताकत के 15 क्षेत्रों की पहचान करता है जो प्रक्रिया में उच्च विकास दर और व्यापक सामाजिक भागीदारी नेटवर्क के लिए एक साथ योगदान करने की क्षमता रखते हैं और विकास को तेज करने के लिए लाभ देते हैं। 2018 के श्रेणीक्रम के अनुसार 29 देश 'विकसित अर्थव्यवस्थाओं' में और 74 देश 'उभरती अर्थव्यवस्थाओं' में हैं। उभरते हुए देशों में भारत 62वे स्थान पर है और भारत को आगे विकसित अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होना है। समावेशी विकास सूचकांक (आईडीआई) 103 देशों के आर्थिक प्रदर्शन का एक वार्षिक मूल्यांकन है, जो यह मापता है कि सकल घरेलू उत्पाद के अलावा आर्थिक प्रगति के ग्यारह आयामों पर देश कैसे प्रदर्शन करते हैं। इसके 3 स्तंभ हैं; वृद्धि और विकासीय समावेश और अंतरसरकारी समानता; प्राकृतिक और वित्तीय संसाधनों का स्थायी भंडारण। समावेशी विकास की प्रमुख विशेषता है

(i) समावेशी विकास का तात्पर्य सामाजिक, पारिस्थितिक और संबंधपरक समावेश से है,

(ii) समावेशी विकास का सम्बंध अन्य विषयों के दृष्टिकोणों से है,

(iii) समावेशी विकास का उपयोग विशिष्ट पूंजीवादी दृष्टिकोण का मुकाबला करने के लिए किया जाता है,

(vi) समावेशिता दर्शाती है कि बुनियादी संसाधनों का उपयोग और आवंटन कैसे व्यवस्थित रूप से आयोजित किया जाता है, और

(v) विकास लोगों के पारिस्थितिक और न्यायसंगत कल्याण को दर्शाता है।

1.5 सारांश

विकास की अवधारणा किसी भी अर्थ में सरल नहीं है। विकास को ग्रामीण समुदायों के पारंपरिक तरीके से आधुनिक समाज में रहने के प्रगतिशील तरीकों से परिवर्तन की एक प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है। विकास का अर्थ है कि लोगों को उनकी क्षमताओं और संसाधनों के आधार पर स्वयं को विकसित करने के लिए सहायता दी जाये है। विकास का संबंध मनुष्य के निवेश, विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण आदि के क्षेत्रों में होता है। सामाजिक विकास का उद्देश्य लोगों के कुल विकास से है, जिसके लिए शक्ति के विकेंद्रीकरण और निर्णय लेने की आवश्यकता होती है ताकि निचले स्तर पर योजना बनाने की प्रक्रिया शुरू हो। इसका अर्थ है कि राजनीतिक और आर्थिक निर्णय जो लोगों के कल्याण

से सम्बधित है में उनकी सक्रिय भागीदारी शामिल करती है। अमर्त्य सेन (1995) के अनुसार विकास शब्द का अर्थ 'सामाजिक विकास है,जो सामाजिक अवसरों के समान है'। इसका अर्थ है कि आर्थिक और गैर–आर्थिक कारकों की भूमिका समाज में स्थान बनाने के लिए और सामाजिक विकास की प्रगतिशीलता को समझने के लिए सामाजिक अवसर उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण और परस्पर है।

1.6 शब्दावली

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) : यह एक निश्चित समय अवधि में आमतौर पर एक वर्ष में अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल प्रवाह है। इसके लिए विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय को सकल घरेलू उत्पाद में जोड़ा जाता है और बहिर्वाह को घटाया जाता है।

मूल्य–लदा : मूल्य रोप्य,किसी के लिए अच्छा या बुरा, वांछनीय या अवांछनीय।

मूल्य–तटस्थ : पक्ष लिए बिना, निष्पक्ष रूप से व्याख्या करना।

1.7 उपयोगी पुस्तकें

एस्टेवा, गुस्तावो। 1991, ''डवलपमेंट'' पीपी 1–23 इन वोल्फगैंग सैश (एड), द डेवलपमेंट डिक्शनरी। लंदनः जेड बुक्स

सेन, ए। 1999, डेवलपमेंट एज फ्रीडम, ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

सैश, वोल्फगैंग (मकज), 1992। द डेवलपमेंट डिक्शनरी : ए गाइड टू नौलेज एंड पावर। लंदनः जेड बुक्स। पी पी 1–21

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) परिवर्तन एक मूल्य–तटस्थ अवधारणा है जबकि विकास एक मूल्य–आधारित अवधारणा है। परिवर्तन के सभी मामले विकास को इंगित नहीं करते हैं। केवल नियोजित–वांछित परिवर्तनों को ही विकास कहा जा सकता है।

2) नहीं।

संदर्भ (References)

अन्नान, के 2005। ''इन लार्जर फ्रीडम'': डिसीजन टाइम एट द यू एन। फोरेन अफेयर। यहाँ उपलब्ध हैः http:èèwww.unis.unvienna.orgèpdfèfreedom_annan.pdf 26 मार्च 2017 को एक्सेस किया गया

ब्रुन्डलैंड, 1987, अवर कॉमन फ्यूचर, वर्ल्ड कमिशन ऑन एन्वायरोंमेंट एंड डवलपमेंट (WCED) ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

चक्रवर्ती, सुखमय, 1987। डवलपमेंट प्लानिंग : द इंडियन एक्सपीरियेंस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पीपी 2–5।

एस्टेवा, गुस्तावो 1991। ''डवलपमेंट '' पीपी 1–23 इन वोल्फगैंग सैश (एड), द डेवलपमेंट डिक्शनरी। लंदनः जेड बुक्स।

इवांस, पी 2002। कलेक्टीव कैपेपीबीलीटीज, कल्चर,एंड अमर्त्य सेन डवलपमेंट एज फ्रीडम, स्टडीज इन कम्पेरेटीव इन्टरनेशनल डवलपमेंट, 37: 2। पीपी 54–60।

फर्ग्यूसन, जेम्स 1994। ''एपिलॉग''। पीपी 279–288 इन द एंटी–पॉलिटिक्स मशीन : डवलपमेंट,डीपॉलीटाईजेशन एंड ब्यूरोक्रेटिक पावर इन लेसोथो, मिनियापोलिस, एम एन : यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस

लॉन्गवर्थ, आर 1999। अमर्त्य सेन नोबेल प्राईज विनिंग इकोनोमिस्ट, द शिकागो ट्रिब्यून। ऑनलाइन 28 मार्च 1999।

मायर्डल, गुन्नार। 1974. ''व्हाट ईज डवलपमेंट ?'' जर्नल ऑफ इकोनॉमिक इश्यू 8 (4): 729–736।

रीड–हेनरी, एस 2012। अमर्त्य सेनः इकोनोमिस्ट, फिलोसफर, ह्युमन डवलपमेंट डोयेन, द गार्जियन ख्ऑनलाइन,, 22 नवंबर 2012. यहां उपलब्धः http:/-www.guardian.co.uk/global&development/2012/nov / 22 / अमर्त्य–सेन ह्युमन–डवलपमेंट–डोयेन। 26 मार्च 2017 को एक्सेस किया गया

सेर्स, डुडले। 1972। ''व्हाट आर वी ट्राईन्ग टू मेजर ?'' जर्नल ऑफ डवलपमेंट स्टडीज 8 (3): 21–36।

सेन, ए 1999। डेवलपमेंट एज फ्रीडम, ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

इकाई 2 विकास के कारक और साधन*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 विकास के कारक

- 2.2.1 आर्थिक कारक
- 2.2.2 राजनैतिक कारक
- 2.2.3 सामाजिक–संरचनात्मक कारक
- 2.2.4 सांस्कृतिक कारक
- 2.2.5 भौतिक और भौगोलिक कारक
- 2.2.6 धार्मिक कारक
- 2.2.7 शैक्षिक कारक
- 2.2.8 प्रशासनिक कारक
- 2.2.9 तकनीकी कारक

2.3 विकास के साधन

- 2.3.1 सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)
- 2.3.2 प्रति व्यक्ति आय
- 2.3.3 कम आय असमानताएँ
- 2.3.4 गरीबी
- 2.3.5 विकास योजना
- 2.3.6 मानव विकास सूचकांक
- 2.3.7 सतत विकास
- 2.3.8 मूलभूत आवश्यकताएं दृष्टिकोण

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 उपयोगी पुस्तकें

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित के लिए सक्षम होंगे:

- विकास के कारक और साधन को समझने में;
- विकास की प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न कारकों का वर्णन करने में; और
- विकास की प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न साधनो पर चर्चा करने में।

*डॉ. विनोद आर्या द्वारा लिखित।

2.1 परिचय

पिछली इकाई में हमने विकास की समझ का अध्ययन किया। अब इस इकाई में हम विकास के कारकों और साधनो पर चर्चा करेंगे।

सामाजिक विकास लोगों को चयन करने और उनके बीच समानता का आनंद लेने के विकल्प को बढ़ाने की एक प्रक्रिया है। चयन की इन विस्तृत श्रृंखलाओं में, लंबा और स्वस्थ जीवन जीना है, शिक्षित होना और सभ्य जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुंचना सबसे महत्वपूर्ण है। इनके साथ ही राजनीतिक स्वतंत्रता, मानवाधिकारों और गरिमापूर्ण जीवन की गारंटी जैसे विकल्प भी महत्वपूर्ण है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लोगों को सशक्त बनाने में विकास की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए सामाजिक विकास न केवल मानव क्षमता–निर्माण से सम्बन्धित है बल्कि स्वास्थ्य सुधार और कुशल ज्ञान इत्यादि से भी सम्बंधित है। यह इन क्षमताओं का उपयोग करने के लिए भी सम्बंधित है। (इकाई 1 देखें) आइये अब हम विकास के कारकों पर चर्चा करते हैं।

2.2 विकास के कारक

विकास के संदर्भ में शामिल प्रमुख कारकों का विश्लेषण करने से पहले हमें यह समझना चाहिए कि कारकों से आपका क्या तात्पर्य है? मरियम वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार एक कारक का मतलब है कि सक्रिय रूप से परिणाम के उत्पादन में योगदान देता है। इसलिए, हमारा कर्त्तव्य है कि उन कारकों को चिह्नित करना जो सक्रिय रूप से विकास की प्रक्रिया में योगदान देते हैं। अब मोटे तौर पर हम समाज के विकास से जुड़े सभी कारकों को आर्थिक कारकों, राजनीतिक कारकों, सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों (सामाजिक–संरचना से संबंधित कारकों सहित), सांस्कृतिक–इतिहास से संबंधित कारकों, भौतिक और भौगोलिक कारकों, धार्मिक कारक, प्रशासनिक कारक और तकनीकी कारक में विभाजित कर सकते हैं। आइए हम इनकी विस्तृत चर्चा करें :

2.2.1 आर्थिक कारक

स्पेंगलर (1957) ने विकास से संबंधित आर्थिक कारकों को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया है। पहले समूह में उन्होंने मुख्य भौतिक अभिकर्त्ताओं (एजेंटों) को रखा, जो उत्पादन प्रक्रिया में शामिल हैं जैसे श्रम बल, धन या पूंजी जो पुनः प्राप्त की जा सकती है, भूमि और प्राकृतिक संसाधन जिन्हें अस्थायी रूप से गैर–प्रजनन योग्य धन और अनुप्रयुक्त प्रौद्योगिकी के रूप में माना जाता है। दूसरे समूह में तंत्र और परिस्थितियों को रखा जाता है। विशेष प्रकार के तंत्र और परिस्थितियों के उपयोग से उत्पादन की मात्रा बढ़ जाती है और फिर विभिन्न अभिकरणों (एजेंसियों) के उपयोग के माध्यम से तैयार वस्तुओं और सेवाओं को पूरा किया जाता है। इस श्रेणी में श्रम के विभाजन, मूल्य प्रणाली, बाजार की सीमा, अंतर–क्षेत्र संतुलन और समग्र मांग आदि पर जोर दिया गया है। स्पेंगलर द्वारा परिकल्पित तीसरी श्रेणी में प्रमुख आर्थिक निर्णयकर्ता और आर्थिक निर्णयों के लिए उपयुक्त वातावरण शामिल है।

इस श्रेणी में जिन अन्य कारकों में प्रभावशाली क्षमता है वे हैं भौतिक और मानव संसाधनों की मात्रा और उनका प्रभावी उपयोग और प्रबंधन। यहां भौतिक और मानव संसाधनों के उपयोग के लिए पूंजी निवेश बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। पूंजी निवेश के समर्थन के साथ–साथ तकनीकी और प्रबंधन स्तर की विशेषज्ञता की भी बहुत आवश्यकता होती है। यदि

विकासशील देश अन्य देशों या बहुराष्ट्रीय कंपनियों की मदद लेते हैं, तो इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि इन विदेशी देशों और एजेंसियों से राजनीतिक स्वायत्तता प्रभावित होगी। यदि हम प्रति व्यक्ति आय और इसे अविकसित, विकासशील और विकसित देशों में बढ़ाने के अवसरों की तुलना करते हैं, तो हम पाते है कि जब हम इसकी तुलना विकसित राष्ट्रों के नागरिकों से करते है तो अविकसित और विकासशील देशों के नागरिकों पर नकरात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। एक और दिलचस्प बिंदु है वह अधिकांश विकसित और विकासशील देशों में मौजूद अतिविषम मौसम/जलवायु की दशाऐं है। ये स्थितियाँ कार्य क्षमता, फसल और पशु उत्पादकता, परिवहन लागत और फलस्वरूप उत्पादकता पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसी तरह कुजनेट्स (1979) का तर्क है कि प्रति व्यक्ति उत्पाद मुख्य रूप से लागत की गुणवत्ता में सुधार पर निर्भर करता है और न केवल लागत की मात्रा पर।

गरीबी के दुष्चक्र को अन्य महत्वपूर्ण कारकों में से एक के रूप में वर्णित किया गया है जो विभिन्न देशों के विकास और विशेष रूप से विकासशील और अल्प–विकसित देशों को प्रभावित करता है। नर्कसे (1973) ने पूंजीगत निवेश और बचत के बारे में विकसित देशों में विरोधाभासी स्थिति पर प्रकाश डाला है। एक ओर इन देशों के लिए पूंजी की उपलब्धता और आपूर्ति को बचत की क्षमता और इच्छाशक्ति द्वारा नियंत्रित किया जाता है, वहीं दूसरी ओर पूंजी की मांग को निवेश की पूर्व आवश्यकता द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में, यदि पूंजी दुर्लभ है, तो यह श्रम गहन प्रौद्योगिकी के उपयोग को भी प्रभावित करता है और इस प्रकार उत्पादन स्तर नीचा रहता है। हालाँकि, नर्से के सिद्धांत की बहुत सी आलोचनाएँ हैं जो तर्क देती हैं कि मनुष्यों में जबरदस्त क्षमता है, जिसमें गरीबी के दुष्चक्र को तोड़ने की क्षमता भी शामिल है।

2.2.2 राजनैतिक कारक

अपनी सुविधा के लिए हम राजनीतिक कारकों को तीन समूहों क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय में वर्गीकृत कर सकते हैं। अब यहाँ हम किसी भी विकास नीति के अंतिम परिणाम में इन तीन स्तरों की परस्पर जुड़ी प्रकृति को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। नीतियों के रूप में इन परिणामों को आगे राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर बातचीत की जाती है। सांटिस (1969) के अनुसार विकास प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले प्रमुख राजनीतिक कारकों में स्वतंत्रता की अवधि, पश्चिमीकरण और राजनीतिक आधुनिकीकरण शामिल हैं, जिसमे एक विशेष राज्य द्वारा वैचारिक अभिविन्यास, सरकार की स्थिरता, और राजनीतिक पार्टी प्रणाली की स्थिरता भी पीछे से जुड जाती है। अन्य महत्वपूर्ण राजनीतिक कारकों में नौकरशाही के चरित्र, सैन्य की भागीदारी स्तर, ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज शक्ति वितरण, विधायिका, कार्यकारी और न्यायिक प्रणालियों के संतुलन और स्वतंत्रता, नागरिक समाज संगठनों की स्वतंत्रता, ब्याज और सहकर्मी समूहों के योगदान शामिल हैं। राजनीतिक संरचना की ग्रहणशील और एकीकृत प्रकृति विकास प्रक्रिया के अंतिम परिणामों में उपर्युक्त कारकों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा, बुनियादी ढाँचे के निर्माण में किसी भी सरकार के प्रयास, जरूरत–आधारित उचित निवेश, भ्रष्टाचार और पूरी प्रक्रिया में शामिल अभिकरणों (एजेंसियों) पर नियंत्रण भी बहुत मायने रखता है। समाज में बहिष्कार और भेदभाव से निपटने के लिए किसी भी सरकार की दक्षता और न्याय देने की क्षमता और विकास की प्रक्रिया में हाशिए पर गए लोगों को शामिल करना भी महत्वपूर्ण है।

विकास की प्रक्रिया के प्रत्येक बिंदु पर राजनीति को एक प्रमुख कारक के रूप में देखा जाता है, बहिष्कार और भेदभाव की प्रणालियों को प्रभावित करने से लेकर बढ़ती हुई जागरूकता

और उनकी प्रशंसा के रूप में (अ) न्याय, और निर्णय लेने की चिंता तक कि कौन सी नीतियों को लागू किया जाना है और कैसे लागू किया जाना है। (हिक्की, सेन, और बुकेना, 2016)। एड्रियन लेफ्टविच (2004) ने राजनीति को संघर्ष, सहकारिता और बातचीत की सभी प्रक्रियाओं के रूप में वर्णित किया और यह बताया की संसाधनों का मालिकाना हक, उपयोग, निर्माण और आवंटन कैसे किया जाए, हालांकि हम इन विचारों पर (साथ ही संसाधनों) संघर्ष भी पाते हैं।

विकास प्रक्रिया में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के माध्यम से राजनीति संचय और विकास से संबंधित है। यह सार्वजनिक सेवाओं, सामाजिक न्याय और कानून के शासन के माध्यम से सामाजिक और नागरिक संरक्षण और संवर्धन पर भी जोर देता है। इसके साथ ही नियोजन क्षेत्रों को अंतर और असमानता की पहचान के लिए काम करना होगा। कुछ ऐसे लोग हैं जो शायद ही कभी स्वयं की पहचान करते हैं या खुद को गरीब के रूप में संगठित करते हैं, जिससे गरीबी के दृष्टिकोण के माध्यम से आम संगठन को समझना मुश्किल हो जाता है।

2.2.3 सामाजिक–संरचनात्मक कारक

यदि हम किसी विकास प्रक्रिया को देखते हैं, तो हम पाएंगे कि यह एक विशेष समाज के भीतर घटित होती है। यद्यपि समाज का आकार भिन्न हो सकता है, लेकिन इसके संगठन (सामाजिक–संरचना) की प्रकृति और कार्य शैली–निश्चित रूप से विकास प्रक्रिया को प्रभावित करती है। यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि विकास की बहस के भीतर सामाजिक संकेतकों के विचार का लंबा इतिहास है (बोएलहौवेर 2010, नॉल 2011)। आर्थिक प्रदर्शन और सामाजिक प्रगति के मापन पर रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद गैर–आर्थिक पहलुओं पर ध्यान काफी हद तक मजबूत हुआ।(स्टिग्लिट्स, सेन और फिटोउस्सी 2009)

उदाहरण के लिए ग्रानोवेटर (2005) का तर्क है कि आर्थिक परिणामों पर सामाजिक संरचना के तीन प्रमुख प्रभाव हैं; जो स्वयं में विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इन कारकों में सामाजिक नेटवर्क के आधार पर तीन प्रभाव सामाजिक नेटवर्क, प्रोत्साहन, सजा और विश्वास शामिल हैं। विकास प्रक्रिया में किसी भी जानकारी का प्रवाह और उसकी गुणवत्ता सामाजिक नेटवर्क पर आधारित है। सामाजिक नेटवर्कों की ये संरचना विकास प्रक्रिया में ही प्रतिफलित प्रोत्साहन और दंड को प्रभावित करती है। ग्रैनवॉटर द्वारा चिन्हांकित तीसरा महत्वपूर्ण पहलू विश्वास कारक है। इस कारक के कारण प्रक्रिया में शामिल अन्य लोगों को यह विश्वास होता है कि सब कुछ 'सही' होगा।

ब्रूंडलैंड रिपोर्ट (1987) ने न केवल सतत विकास के महत्व को प्रकट किया है, बल्कि वह वैश्विक सामाजिक विकास के लिए भी तर्क देता है। रिपोर्ट में परा समाजिक (ट्रांस–सोसायटी) के विकास पर विचार करने की आवश्यकता और विभिन्न समाजों पर इसके परिणामों का भी उल्लेख किया गया है। सरल शब्दों में, हमें यह भी विचार करने की आवश्यकता है कि एक समाज का विकास दूसरे समाज के नुकसान की लागत पर नहीं हो सकता है।

नीदरलैंड के एक दिलचस्प उदाहरण में विकास प्रक्रिया में इन कारकों की भूमिका को समझने के लिए 'सामाजिक पूंजी' ढांचे का एक समग्र रूप इस्तेमाल किया गया है। पुटनम (2000) के सामाजिक पूंजी सूचकांक की अवधारणा का उपयोग करते हुए, उन्होंने विश्वास, भागीदारी और एकीकरण के सामाजिक, संगठनात्मक और राजनीतिक आयामों को वर्गीकृत किया है। भारतीय संदर्भ में, यह भी समझना होगा कि औपनिवेशिक सरकारों द्वारा किए गए बदलावों ने समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना को कैसे प्रभावित किया है (वर्सुलिस, 1957)। ये भारत के संविधान में निहित प्रावधानों के साथ संयुक्त हैं, जिसने सभी को कानून के दायरे

में समान बना दिया है और आत्म क्षमताओं को विकसित करने और फिर समग्र विकास प्रक्रिया में योगदान करने के लिए सभी को (कानूनी रूप से) सक्षम किया है।

बहुत सारे समुदायों, जिन्हे सदियों से दमन, हाशिए और शोषण का सामना करना पड़ा है, उन्हें सामाजिक–संरचनात्मक कामकाज के साथ–साथ समान अधिकारों के साथ और बड़े पैमाने पर भारतीय समाज के विकास में अपनी क्षमताओं में भाग लेने के लिए सामाजिक–संरचनात्मक कामकाज में किए गए बदलावों से लाभ उठाया है (कुमार, 2007)। भारतीय सामाजिक संरचना, जिसमें सामंती समाज का इतिहास और संस्कृति भी विकास प्रक्रिया को प्रभावित करती है। इस संदर्भ में यह सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा परिलक्षित किया गया है कि उत्पादन के पूंजीवादी प्रणाली के साथ सह–मौजूदा समाज के सामंती या अर्ध–सामंती स्वभाव से भी अधिक विकास प्रक्रिया बाधित होती है। यह भी बाजार के विकास के लिए प्रतिबंध का परिणाम है। इसके विपरीत, वैश्वीकरण के प्रभावों के कारण विकसित देशों के शहरी कुलीन वर्गों में एक नई प्रवृत्ति को मान्यता दी गई है, जहां वे विकसित देशों के कुलीन वर्गों के सांस्कृतिक पद्धिति की नकल करने की कोशिश करते हैं। इसलिए परिणामस्वरूप खपत दर बढ़ जाती है और पूंजी का संचय कम हो जाता है। यह आगे विकसित देशों की विकास प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है (ड्यूसेनबेरी, 1949)।

2.2.4 सांस्कृतिक कारक

संस्कृति लोगों के समूह द्वारा व्यक्त किए गए दृष्टिकोणों, मूल्यों, विश्वासों और व्यवहारों का संग्रह है, और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी (मात्सुमोतो, 1997) को प्रेषित होती है। यद्यपि यह विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न हो सकता है, लेकिन किसी भी सांस्कृतिक या ऐतिहासिक कारक के कारण भेदभाव की मात्रा किसी भी देश के गरीब तबके को पीछे रखती है। सामाजिक विकास की प्रक्रिया के साथ, प्राथमिकता लोगों के उत्थान के लिए है, लेकिन मुख्यधारा में शामिल होने के प्रयास में कई समूहों ने भारतीय समाज में उनके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलू को दबा दिया है। संस्कृति स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है। लोग इच्छाओं, विचारधाराओं और विश्वासों द्वारा नियंत्रित होते हैं, और उन्हें आर्थिक उपलब्धि के बाद भी आदर्शों द्वारा निर्देशित होने की आवश्यकता होती है। शिक्षा और संस्कृति के कारण राष्ट्रों के बीच मतभेद खासकर विकास के स्तर पर हैं।

समाजशास्त्रीय पहलू के साथ पारंपरिक और आधुनिक संस्कृति सांस्कृतिक पश्चता और दरार में परिणत होती है। कभी–कभी, पारंपरिक संस्कृति विकास में बाधा पैदा कर सकती है। सामाजिक अधिकारों की एक कमजोर और गैर–सार्वभौमिक प्रणाली समाज के बहुत से वर्गों के लिए समान अवसरों और क्षमताओं का परिणाम नहीं देती है। इस तरह के समूह एक ओर हाशिए पर रहते हैं और इन वर्गों के सदस्यों की संभावित क्षमताओं के नुकसान के साथ विकास प्रक्रिया का अभाव रहता है। उदाहरण के लिए, भारतीय पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को सामाजिक पदानुक्रम में नीचे रखा गया है। इस स्थिति में महिलाएं पारंपरिक संस्कृति से बाहर निकलती हुई व्यवस्था का शिकार बनी हुई हैं।

यही नहीं, बड़े पैमाने पर भारतीय समाज ने इस तरीके से महिलाओं की संभावित उत्पादकता खो दी है। कुछ अंधविश्वासों और पूर्वाग्रह ग्रसित गहरी जड़ें जमा चुकी सांस्कृतिक प्रथाएं शिक्षा के विकास में बाधा पैदा कर सकती है। यह असमान और शोषक स्थिति आगे चलकर विकास संबंधी चिंताओं, जैसे परिवार नियोजन, सभी के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता में बाधा उत्पन्न करती है। इसके अलावा, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य

पिछड़े वर्गों सहित उप–वर्गीय और हाशिए के समाज, जो देश की अधिकांश आबादी का गठन करते हैं, विकास प्रक्रिया में संलग्न होने से वंचित रह गए हैं। इस प्रकार की परिस्थितियों ने समाज के विशेष सामाजिक समूहों द्वारा पारंपरिक और आधुनिक संसाधनों और संस्थानों के एकाधिकार को जन्म दिया है और सभी के लिए विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है (कुमार, 2014)।

2.2.5 भौतिक और भौगोलिक कारक

किसी भी देश की भौगोलिक स्थिति और पर्यावरण की स्थिति की प्रकृति भी विकास के सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से हैं। परिवहन लागत, भूमि की उत्पादकता, विभिन्न भौगोलिक इलाकों तक पहुंचने में कठिनाई, रोग बोझ आदि इस श्रेणी के प्रमुख कारक हैं जो आर्थिक गतिविधिओं को प्रभावित करते है (गैलप, 1999)। कुछ पसंदीदा भौगोलिक क्षेत्रों में जनसंख्या एकाग्रता, समुद्र–तटों और नदियों के साथ संयोजकता (कनेक्टिविटी) भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करती है।

यह वास्तव में एक संयोग मात्र नहीं है कि सबसे गरीब देश उष्ण कटिबंध में हैं, जहां जलवायु शुष्क है, जहां मिट्टी कम उपजाऊ है, पानी की उपलब्धता कम है, और रोग अधिक बढ़ते है। दूसरी ओर यूरोप और उत्तरी अमेरिका, बहुत उपजाऊ भूमि, एक मध्यम जलवायु और स्वस्थ वर्षा के विशाल पथ से लाभ उठाते हैं। इतनी ऊर्जा जलवायु परिस्थितियों में, गर्म या ठंडे, और फिर विकास के लिए बचे हुए ऊर्जा के अस्तित्व के बनाये रखने के प्रयत्नों मूल व्यवसाय में लग जाती है।

2.2.6 धार्मिक कारक

धर्म को एक कारण, सिद्धांत या विश्वास और विश्वास के साथ आयोजित प्रणाली के रूप में समझा जा सकता है। किसी विशेष समाज के विकास में धर्म की भूमिका को मैक्स वेबर ने अपने अध्ययन द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म में रेखांकित किया है। भारत के मामले में, जबकि देश ने आर्थिक विकास और विकास में बदलाव देखा है, लेकिन धर्म ने समाज में अपनी केंद्रीय स्थिति नहीं खोई है। यह अभी भी भारतीय समाज में सामाजिक पदानुक्रम को निर्धारित करता है। अलग–अलग धर्मों के साथ जीवनशैली, राजनीतिक और ऐतिहासिक कारकों के अलावा धार्मिक मतभेद भी हैं। इनसे एक ओर सामाजिक एकजुटता पैदा हुई है, बल्कि इनसे अनुयायियों में भेदभाव और असमानताएँ भी पैदा हुई हैं। भारतीय के इन विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं ने उनके अनुयायियों द्वारा व्यवसाय और अन्य संबंधित आर्थिक गतिविधियों के चयन को भी प्रभावित किया है।

2.2.7 शैक्षिक कारक

शिक्षा हर दृष्टि से विकास के प्रमुख कारकों में से एक है। मानव पूंजी में पर्याप्त निवेश के बिना कोई भी देश स्थायी आर्थिक विकास प्राप्त नहीं कर सकता है। शिक्षा और जागरूकता इस धारणा को समष्द्ध करती है कि लोग अपने और दुनिया के हैं। यह उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है और लोगों और समाज को व्यापक सामाजिक लाभ प्रदान करता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक साधन है और विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण साधन है। विशेष रूप से, मानव संसाधन विकास में शिक्षा की भूमिका पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षा नागरिकों के लिए दक्षता और नवाचार बढ़ाती है और उद्यमशीलता

और तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करती है। यह आर्थिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित करने और धन के वितरण को बढ़ाने में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन एक दोतरफा प्रक्रिया है। जबकि शिक्षा एक पूरे रूप में संस्कृति को संरक्षित, प्रसारित करने के लिए जिम्मेदार है, यह सामाजिक परिवर्तन शैक्षिक विचारों के लिए साधन और षैक्षित विचारों की पूर्वशर्त है। यह सामाजिक विकास प्रक्रिया को गति प्रदान करता है और उन्हें दिशा और उद्देश्य प्रदान करता है। शिक्षा लोगों को सामाजिक परिवर्तनों के लिए तैयार करती है और उन सामाजिक परिवर्तनों की प्रकृति निर्धारित करती है जिन्हें लाया जाना चाहिए। यह सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। सभी स्तरों पर सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वांछित सामाजिक परिवर्तन और विकास के लिए पूर्व–आवश्यकता में से एक है।

2.2.8 प्रशासनिक कारक

औपनिवेशिक नियमों से स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले अधिकांश देश प्रशासन के संदर्भ में औपनिवेशिक संस्कृति को समाप्त नहीं कर पाए हैं। परिणामस्वरूप कई बार प्रशासनिक और नौकरशाही कामकाज शोषणकारी, गैर–नैतिक मूल्यों का अभ्यास करने के लिए जारी रहती है और अक्षम साबित होती है। प्रशासनिक प्रक्रिया में लालफीताशाही और भ्रष्टाचार की समस्याएं विकास की प्रक्रिया के लिए हानिकारक परिणामों की ओर ले जाती हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों की निरंतर विफलताओं ने निजी क्षेत्र को अपने प्राथमिक क्षेत्रों के संचालन के लिए आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए हैं। राजनीतिक नेताओं और प्रशासनिक तंत्र के बीच की सांठगांठ हमें नीति निर्माण, वांछित लक्ष्यों के कार्यान्वयन और उपलब्धि में खामियों की ओर ले जाती है।

2.2.9 तकनीकी कारक

वैश्वीकृत दुनिया में सूचना और प्रौद्योगिकी के बढ़ते महत्व के साथ, विकसित और विकासशील देशों को विकसित देशों की उन्नत प्रौद्योगिकियों और सूचनाओं पर निर्भर होने के लिए मजबूर किया जाता है। इस तरह की बाध्यकारी स्थितियों के परिणामस्वरूप पुरानी मशीन और तकनीक की खरीद होती है जो अब खारिज हो गई है या विकसित देशों के लिए इतनी अग्रिम नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में, विकासशील देश वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं हैं और इसलिए वांछित परिणाम लाने में सक्षम नहीं हैं। इसलिए, विकासशील और कम विकसित देश श्रम–गहन कामकाज की ओर मुड़ते हैं, और पूंजी निवेश की कमी का भी सामना करते हैं।

बोध प्रभन I

1) आप कारक से क्या समझते है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) यदि विकासशील देश अन्य देशों या बहुराष्ट्रीय कंपनियों की मदद लेते हैं, तो इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि राजनीतिक स्वायत्तता विदेशी देशों और एजेंसियों द्वारा ..... होगी।

3) किसने तर्क दिया कि प्रति व्यक्ति उत्पाद प्राथमिक रूप से आगत की गुणवत्ता में सुधार पर निर्भर करता है और न केवल आगत की मात्रा पर।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) विकास प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले प्रमुख राजनीतिक कारकों में ..... शामिल हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) ..... 1987 में प्रकाशित आयोग की रिपोर्ट में सतत विकास के महत्व का पता नहीं चला है।

6) किसी भी देश की भौगोलिक स्थिति और पर्यावरणीय स्थितियों की प्रकृति भी विकास में सबसे अधिक ..... कारकों में से हैं

2.3 विकास के साधन

लिटिल ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार, इंस्ट्रूमेंट का अर्थ है नाजुक या वैज्ञानिक कार्य या मापने वाले उपकरण (हॉकर, 2015, 360)। इस प्रकार यहां हमारा ध्यान उन तरीकों और उपायों पर होगा जिनके माध्यम से विकास प्रक्रिया को मापा जाता है। विभिन्न देशों के विकास के स्तर को मापने की दिशा में किए गए प्रयास आम तौर पर कम से कम शुरुआत में आर्थिकी उन्मुख रहे हैं। इसलिए सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी), सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (एनएनपी), प्रति व्यक्ति आय आदि जैसे मानदंडों का उपयोग विकास के संदर्भ के साथ स्थिति और आवश्यकताओं को निर्धारित करने के साधनो के रूप में किया गया था। लेकिन धीरे–धीरे इन साधनो पर सवाल उठाया गया, क्योंकि वे केवल आंशिक रूप से विकास को समझने में हमारी मदद करते हैं। इसलिए, नई अवधारणाओं को शुरू किया गया जैसे जीएनपी के संशोधन, सामाजिक संकेतक का उपयोग और सामाजिक

विवरण की संबद्ध प्रणाली, विकास के समग्र सूचकांकों का विकास आदि (हिक्स एंड स्ट्रीटन, 1979)। आइए हम विकास के प्रमुख साधनो पर चर्चा करें।

2.3.1 सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

विकास को मापने के लिए सबसे अधिक विवादित परंतु अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले साधनों में से एक जीएनपी रहा है। विभिन्न देशों के विकास के स्तर की तुलना के लिए इसका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया है। इस अवधारणा ने बाजार मूल्य या कारक लागत, औद्योगिक और कृषि उत्पादन, निवेश, खपत और सरकारी सेवाओं (हिक्स एंड स्ट्रीटन, 1979) के आधार पर एक भार (वेटेज) तंत्र का उपयोग करके राष्ट्रीय लेखांकन का आकलन करने में मदद की।

2.3.2 प्रति व्यक्ति आय

यह किसी भी देश के विकास के स्तर का अनुमान लगाने के लिए महत्वपूर्ण साधनो में से एक रहा है। अधिक से अधिक अर्जित करने के संदर्भ में आर्थिक विकास के साथ प्रारंभिक आकांक्षाएं योजनाबद्ध नहीं थीं। विकासशील देशों के नीति निर्माताओं को विश्वास था कि आर्थिक विकास में वृद्धि धीरे–धीरे गरीबी, आय असमानताओं और बेरोजगारी को दूर करने में मदद करेगी। हालांकि, बाद में इस स्थिति को चुनौती दी गई और प्रश्न भी किये गए। आर्थिक विकास की अंधी दौड़ के बारे में आकलन किया गया, जिसने सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय परिस्थितियों पर बुरा असर दिखाना शुरू कर दिया।

2.3.3 कम आय असमानताएँ

विकास को मापने के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण साधन किसी भी देश में सामान्य रूप से और विशेष रूप से विकासशील और कम विकसित देशों में आय असमानताओं का स्तर है। विश्व बैंक और ऑक्सफैम जैसी अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्रकाशित कई रिपोर्टों में समय और फिर से विकसित देशों की बहुसंख्यक आबादी की आय असमानता और राष्ट्रीय आय में उनकी मामूली हिस्सेदारी पर फिर से प्रकाश डाला गया है। दूसरी ओर कुछ अपवादों के साथ अधिकांश विकासशील देशों में जहाँ अमीर लोग अल्पसंख्यक है उनका हिस्सा राष्ट्रीय आय में अधिक है। इसलिए इस मानदंड के अनुसार विभिन्न सामाजिक वर्गों में आय की कम असमानताएं हैं।

2.3.4 गरीबी

किसी भी देश में गरीबी का स्तर किसी भी समाज में विकास प्रक्रिया का आकलन करने के लिए पारम्परिक मानदंडों में से एक रहा है। विकासशील देशों के लिए ऊँचा आय असमानताओं के साथ कम सकल राष्ट्रीय उत्पाद विशेष रूप से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में गरीबी फैलाने में बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विकासशील देशों में व्यापक स्तर पर गरीबी के स्तर के कारण, पोषण इत्यादि के संबंध में न्यूनतम जीवन स्तर, बुनियादी सुविधाओं तक पहुंच, स्वास्थ्य और शिक्षा आदि को लाने के लिए चुनौतियां अधिक हैं।

2.3.5 विकास योजना

ऊपर उल्लिखित अन्य साधनो के अलावा, विकास के संबंध में प्राथमिक साधन में से एक विकास योजना है। विकास की योजना को विभिन्न रूप से व्याख्या की जा सकती है, जो किसी विशेष समाज के संदर्भ और समय पर निर्भर करती है। भारतीय संदर्भ में, यह कार्य

भारत के योजना आयोग के प्रावधान के साथ किया गया है। आयोग की दूरदर्शी योजना के तहत, भारत ने पंचवर्षीय योजनाओं का पालन किया। हाल ही में योजना आयोग को नीति आयोग के रूप में पुनर्गठित किया गया है। भारत के प्रधान मंत्री इस निकाय के आधिकारिक अध्यक्ष होते है, और उपसभापति और विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित अन्य विशेषज्ञों के साथ काम करते हैं।

2.3.6 मूलभूत आवश्यकताएं दृष्टिकोण

विकास का आकलन करते समय एक अन्य महत्वपूर्ण साधन बुनियादी जरूरतों का दृष्टिकोण रहा है। इस दृष्टिकोण को किसी विशेष देश में बुनियादी जरूरतों की पूर्ति को मापने के लिए संकेतकों के एक समूह की आवश्यकता होती है। हिक्स एंड स्ट्रीटन (1979) ने स्वास्थ्य में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, शिक्षा में प्राथमिक विद्यालय में नामांकन, पोषण में प्रति व्यक्ति कैलोरी, शिशु मृत्यु दर, जल आपूर्ति के सन्दर्भ में शिशु मृत्यु दर, स्वच्छता से सम्बंधित शिशु मृत्यु दर और आवास किसी भी देश के नागरिकों की बुनियादी जरूरतों को निर्धारित करते है।

2.3.7 सतत विकास

विकास को अधिक समय परीक्षण के संदर्भ में रखने के लिए उपयोग किए जाने वाले एक और साधन सतत विकास का विचार था। यह विचार ब्रंटलैंड कमीशन रिपोर्ट द्वारा प्रतिपादित किया गया और 'आवर कॉमन फ्यूचर 'के रूप में 1987 में प्रकाशित किया गया। इसने भविष्य के परिप्रेक्ष्य के संबंध में विकास के क्षेत्र में किए गए प्रयासों पर सवाल उठाया। रिपोर्ट ने सतत विकास को वर्तमान की आव्यश्यक्ताओं को बिना किसी भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किया बिना पूरा करना है। (पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट, 1987)

2.3.8 मानव विकास सूचकांक

विकास के क्षेत्र में क्रमिक यात्रा धीरे–धीरे आर्थिक विचार से व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर के विचारों पर स्थानांतरित हो गई है। इस तरह के बदलाव उन सवालों के परिणाम थे जैसे – विकास किसके लिए? किस कीमत पर विकास हासिल करना? इस तरह के तर्कों के आधार पर, मानव विकास सूचकांक (HDI) को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा 1990 में मानव विकास रिपोर्ट में प्रकाशित किया गया था। मानव विकास सूचकांक के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले मूल सिद्धांतों में लोगों के पसंद चयन क्षमता में वृद्धि शामिल है। इन विकल्पों में लंबे समय तक जीने की इच्छा, ज्ञान प्राप्त करने के लिए, जीवन का एक आरामदायक मानक होना, लाभपूर्ण तरीके से नियोजित होना, स्वच्छ हवा तक पहुंच और सम्मानजनक सामुदायिक जीवन जीने की स्वतंत्रता शामिल है। इसके अलावा, सूचकांक में जीवन प्रत्याशा, वयस्क साक्षरता दर और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) जैसे सीमित आर्थिक चर भी शामिल थे ताकि इसे और अधिक व्यापक बनाने के लिए क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) को समायोजित किया जा सके। उपरोक्त के अलावा, सूचकाँक को किसी विशेष देश द्वारा विकास के क्षेत्र में हुई प्रगति को मापने के लिए डिजाइन किया गया था। अंतिम लेकिन कम नही है कि आर्थिक और सामाजिक साधनो के संश्लेषण की कल्पना नहीं की गई थी और इस सूचकांक के माध्यम से विभिन्न समाजों के विकास की व्यावहारिक माप के लिए लागू किया गया था।

बोध प्रभन II

i) साधन से आप क्या समझते है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) जीडीपी का पूरा नाम क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) सतत विकास को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अ) मानव विकास सूचकांक (HDI) 1990 में ..... द्वारा डिजाइन किया गया था।

2.4 सारांश

विकास पूरे इतिहास में मानव समाज की जन्मजात आकांक्षाओं में से एक रहा है। विकास के इस उद्देश्य की यात्रा विभिन्न आयामों से होकर गुजरी है। यह एक अनौपचारिक विचार और योजना से एक औपचारिक विचार का रूप ले चुका है। इसने राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर लिया है और यह अब वैश्विक विचार का विषय है। विकास अर्थव्यवस्था केंद्रित न होकर के व्यक्ति केंद्रित हो गया है। सामाजिक स्तर के विचार प्राथमिक महत्व के भी रहे हैं। पजेस्का (1973) के अनुसार, सामाजिक–आर्थिक प्रगति को उन सिद्धांतों द्वारा सही ढंग से समझाया और समझा नहीं जा सकता है जो प्रक्रियाओं को निर्धारित करने वाले कारकों से संबंधित वास्तविक अनुभव को ध्यान में नहीं रखते हैं। इन कारकों को सामाजिक–आर्थिक संरचनाओं के उद्देश्य और व्यवस्थित ज्ञान और उनके कामकाज पर भरोसा करके ही पहचाना जा सकता है। इस इकाई में हमने आर्थिक कारकों, राजनीतिक कारकों, सामाजिक संरचनात्मक कारकों, धार्मिक कारकों, तकनीकी कारकों जैसे विकास के कारकों पर चर्चा की है और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी), प्रति व्यक्ति आय, गरीबी बुनियादी जरूरत दृष्टिकोण और मानव विकास सूचकांक जैसे विकास के साधनों पर भी चर्चा की है।

2.5 शब्दावली

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) : सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में यदि विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय जोड़कर प्राप्त किया जाता है।

प्रति व्यक्ति आय : प्रति व्यक्ति आय (पीसीआई) या औसत आय एक निर्धारित वर्ष में किसी व्यक्ति (शहर, क्षेत्र, देश, आदि) में प्रति व्यक्ति अर्जित औसत आय को मापती है। इसकी गणना क्षेत्र की कुल आय को उसकी कुल जनसंख्या से विभाजित करके प्राप्त की जाती है।

सतत विकास : ब्रून्डलैंड रिपोर्ट सतत विकास को विकास के रूप में परिभाषित करती है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करती है।

मानव विकास सूचकांक : मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) जीवन प्रत्याशा, शिक्षा (साक्षरता दर, विभिन्न स्तरों पर सकल नामांकन अनुपात) और शुद्ध उपस्थिति अनुपात, और प्रति व्यक्ति आय संकेतकों का एक समग्र समग्र सूचकांक है, जिसे विभिन्न देशों के अंदर विकास के स्तर को श्रेणीगत किया जाता है

2.6 उपयोगी पुस्तकें

Cohn, Samuel and Gregory Hooks, 2016, 'Introduction: A Manifesto for the Sociology of Development" in Gregory Hooks (ed.) The Sociology of Development Handbook, University of California Press, California.

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

i) एक कारक का मतलब है कि एक परिणाम के उत्पादन में सक्रिय रूप से योगदान देता है।

ii) प्रभावित।

iii) साइमन कुजनेट्स।

vi) स्वतंत्रता की अवधि, पश्चिमीकरण और राजनीतिक आधुनिकीकरण, एक विशेष राज्य द्वारा वैचारिक अभिविन्यास, सरकार की स्थिरता, और राजनीतिक पार्टी प्रणाली की स्थिरता।

v) ब्रूंड्टलँड

vi) महत्वपूर्ण

बोध प्रश्न II

i) एक साधन का अर्थ है नाजुक या वैज्ञानिक कार्य या एक मापने वाले साधन के लिए उपयोग किए जाने वाले साधन का एक उपकरण।

ii) सकल राष्ट्रीय उत्पाद।

iii) सकल घरेलु उत्पाद।

iv) सतत विकास का मतलब वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना है लेकिन भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना।

v) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम

संदर्भ (References)

Boelhouwer, Jeroen, 2010, Wellbeing in the Netherlands: The SCP Life Situation Index Since 1974, The Hague: The Netherlands Institute for Social Research.

Cohn, Samuel and Gregory Hooks, 2016, 'Introduction: A Manifesto for the Sociology of Development" in Gregory Hooks (ed.) The Sociology of Development Handbook, University of California Press, California.

Duesenberry, J.S., 1949, Income, Saving and the Theory of Consumer Behaviour, Harvard University Press, Cambridge.

Engineer, Asghar Ali, 1984, Understanding Communalism: Report on a Seminar, Economic and Political Weekly, May 5, 1984, Vol. 19, No. 18, pp. 752-756.

Gallup, John Luke (et. al), 1999, Geography and Economic Development, International Regional Science Review, Vol. 22, Issue 2, pp. 179-232.

Granovetter, Mark, 2005, The Impact of Social Structure on Economic Outcomes, Journal of Economic Perspectives, Volume 19, Number 1, Winter 2005, pp. 33-50.

Hawker, Sara, 2015 (First Indian Edition 23rd Impression), Little Oxford English Dictionary, Oxford University Press, New Delhi.

Hicks, Norman And Paul Streeten, 1979, Indicators of Development: The Search for a Basic Needs Yardstick, World Development, Vol. 7, pp. 567-580, Pergamon Press Ltd., Printed in Great Britain.

Kumar, Vivek,2014, Caste and Democracy in India:A Perspective from Below,Gyan Publishing House,New Delhi

Kuznets, Simon, 1979, Modern Economic Growth: Rate, Structure and Spread, Oxford & IBH Publishing Company, New Delhi.

Marshall, Katherine, 2001, Development and Religion: A Different Lens on Development Debates, Peabody Journal of Education , 2001, Vol. 76, No. 3è4, Global Issues in Education (2001), pp. 339-375.

Noll, Heinz-Herbert, 2011, The Stiglitz Sen Fitoussi Report: Old Wine in New Skins? Views From a Social Indicators Perspective, Social Indicators Research, Vol. 102, No. 1, pp. 111-116.

Nurkse, Ragnar, 1973, Problems of Formation in Underdeveloped Countries, Oxford University Press, Delhi.

Pajestka, J., 1973, The Socio-Economic Factors of Progress, Acta Oeconomica, Vol. 10, No. 1, pp. 3-20.

Report of the World Commission on Environment and Development, 1987, United Nations.

Spengler, Joseph J., 1957, Economic Factors in Economic Development, The American Economic Review, Vol. 47, No. 2, Papers and Proceedings of the Sixty-eighth Annual Meeting of the American Economic Association (May, 1957), pp. 42-56.

Stiglitz J.E., A. Sen and J.-P. Fitoussi (2009). Report by the Commission on the Measurement of Economic Performance and Social Progress, Accessed from http://www.insee.fr/fr/publications-et-services/dossiers_web/stiglitz/doccommission/RAPPORT_anglais.pdf. on 20.06.2020.

Tsantis, Andreas C., 1969, Political Factors in Economic Development, Comparative Politics, Oct., 1969, Vol. 2, No. 1 (Oct., 1969), pp. 63-78.

William, Crain, 2014 (Sixth Edition), Theories of Development: Concepts and Applications, Pearson Education Limited, Edinburgh Gate, Harlow, U.K.

इकाई 3 विकसित, विकासशील और अविकसित

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विकास से संबंधित वर्गीकरण को समझना

3.3 विकसित, विकासशील और अल्पविकसित

3.3.1 विकसित देश

3.3.2 विकासशील देश

3.3.3 अविकसित देश

3.4 विकास पर बहस

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होंगेः

- विकसित, विकासशील और अविकसित राष्ट्रों के वर्गीकरण के लिए मानदंड बताने में;
- विकसित, विकासशील और अविकसित अर्थव्यवस्थाओं के अर्थ और परिभाषा पर चर्चा करने में;
- देशों के बीच राजनीतिक–अर्थव्यवस्था आधारित संबंधों का विश्लेषण करने में;
- गरीब क्षेत्रों की आर्थिक विकास की संभावनाओं की सीमा; और
- विकास बहस के विभिन्न आयामों पर चर्चा करने में।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने विकास के साधनों और कारकों पर चर्चा की। इस इकाई में हम विकसित, विकासशील और अविकसित के संदर्भ में देशों के वर्गीकरण पर चर्चा करेंगे।

हम विकास की बहस पर भी चर्चा करेंगे। 'विकास' शब्द को परिभाषित करना मुश्किल है क्योंकि परिभाषा उस संदर्भ पर निर्भर है जिसमें इसका उपयोग किया जा रहा है। यद्यपि इसका उपयोग दिन–प्रतिदिन की बातचीत और राजनीतिक चर्चाओं में किया जाता है। जहां शब्द के उपयोगकर्ता द्वारा इसके साथ कुछ धारणा जुड़ी होती है। यहाँ दिया जाने वाला पहला स्पष्टीकरण यह है कि 'विकास' शब्द का अर्थ ज्ञान के कई क्षेत्रों जैसे व्यक्तित्व, परिपक्वता, शिक्षा, जीव, संज्ञानात्मक, नैतिक, शिक्षा, मनोविज्ञान, जीवन, भाषा, वयस्कता आदि

से हो सकता है (देखें क्रैन 2014)। यह शब्द जनसांख्यिकीय परिवर्तन, आर्थिक विकास, संसाधनों का बढ़ता उपयोग, आधुनिकीकरण, उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी और राजनीतिक स्वतंत्रता जैसे कई लक्षण को दर्शाता है। इस प्रकार, हम उपरोक्त चर्चा से यह अनुमान लगा सकते हैं कि विकास 'की अवधारणा की समझ व्यक्तिगत स्तर से शुरू की जा सकती है, लेकिन धीरे–धीरे इसमें अन्य सामाजिक प्राणी शामिल हैं जो समुदाय और समाज में रहते हैं। विकास की अवधारणा को समझने की कोशिशें यहीं नहीं रुकती और आगे चलकर सामाजिक संबंधों, सामाजिक–क्रियाकलापों और सामाजिक–संरचनाओं की सीमाओं में भी प्रवेश करती हैं। बारी–बारी से सामाजिक संरचनाएं आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, धार्मिक और राजनीतिक विचारधाराओं, कार्यप्रणाली और उनकी संरचनाओं के साथ (Cohn & Hooks, 2016: 3) से और अधिक प्रभावित होती हैं।

अब विकसित, विकासशील और अविकसित वर्गीकरण और संबंधित मुद्दों पर जाने से पहले हमें 'विकास' शब्द को परिभाषित करते हैं। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी और थिसॉरस ने इसे विकास या उन्नति के चरण के रूप में उल्लेख किया है (इलियट, 2001)। लेकिन इस तरह का शाब्दिक अर्थ फिर से भ्रम की स्थिति के बीच है। यहां जो भ्रम पैदा होता है, वह शब्द के विकास को स्पष्ट करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले पर्यायवाची शब्दों के बारे में है। उदाहरण के लिए परिवर्तन, विकास, धन और दूसरों के बीच प्रगति। (इकाई 1 देखें)। आइए हम इन शब्दों के बीच संक्षेप में अंतर करते हैं।

हम शब्द परिवर्तन के साथ शुरू कर सकते हैं जो शाब्दिक रूप से अलग या अलग होने का संकेत देता है (इलियट, 2001: 113)। हालाँकि, हम इस अर्थ से निरीक्षण कर सकते हैं कि परिवर्तन किसी भी दिशा में हो सकता है। 'ग्रोथ' का मतलब आकार, ऊँचाई, राशि आदि में वृद्धि करना है (इलियट, 2001: 331)। धन का अर्थ अमीर होना या संपन्नता, संपत्ति, पूंजी, धन आदि का प्रचुर मात्रा में होना है (इलियट, 2001: 877)। दूसरी ओर 'प्रगति' का अर्थ आगे या ऊपर बढ़ना है (इलियट, 2001: 594)। विकास की एक व्यापक समाजशास्त्रीय परिभाषा भी गुन्नार मिर्डल (1974) द्वारा प्रदान की गई है। वह संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के ऊर्ध्व गति के संदर्भ में विकास को परिभाषित करता है।

सोचे और करें 1

अपने आसपास के अलग–अलग लोगों से इस अर्थ के बारे में पूछने की कोशिश करें कि वे किन शर्तों को समझते हैं, विकास, धन और प्रगति। संदर्भों पर ध्यान दें और फिर इन अवधारणाओं के शब्दकोश अर्थ और परिभाषाओं के साथ उनकी तुलना करें।

3.2 विकास के लिए संबंधित श्रेणियों का एकीकरण

पर्यायवाची शब्दों को अलग करने के बाद आइए हम विकास के वर्गीकरण पर चर्चा करें। अनुसंधान के एक क्षेत्र के रूप में विकास अध्ययन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद में युद्ध–ग्रस्त देशों के पुनर्निर्माण और इसके परिचर आर्थिक विकास के साथ उनकी उत्पत्ति हुई है। एक विचारधारा के रूप में विकास की उत्पत्ति का पता उन्नीसवीं सदी में औद्योगिकीकरण के युग से लगाया जा सकता है। मैक्स वेबर, कार्ल मार्क्स और एमिल दुर्खीम जैसे राजनीतिक और सामाजिक विचारकों ने आम अवलोकन के आधार पर अलग–अलग दृष्टिकोणों की पेशकश की कि समाज 'पारंपरिक' रूपों से बदल रहा था जो कि अंधविश्वास, भाग्यवाद या भावनाओं से लेकर उपजे अधिकार और विश्वास आधारित था। कार्यकुशलता और तर्कशीलता के साथ–साथ दक्षता पर जोर देने और दुनिया को वैज्ञानिक रूप से समझाने की क्षमता के

प्रयोग के प्रभुत्व वाले आधुनिक रूपों तक जाता है। (दुर्खीम 1964; मार्क्स 1964; मार्क्स एंड एंगेल्स 1848; वेबर 1958, 1978, एरन 2008 और 2009 देखें)। इन प्रमुख विचारकों की विरासत को व्यापक रूप से विकास सिद्धांत की उत्पत्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है, आधुनिकीकरण सिद्धांत का रूप लेता है।

इसके अलावा यदि इस अवधारणा के इतिहास को देखें तो पायेंगे कि दूसरे विश्व युद्ध से उभरते विभिन्न देशों और उपनिवेशवाद से मुक्त होने की प्रक्रिया ने नीति के रूप में विकास की नींव रखी। गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक बहिष्कार (संयुक्त राष्ट्र, 1995, सामाजिक विकास के लिए विश्व शिखर सम्मेलन की रिपोर्ट) की प्रमुख सामाजिक समस्याओं के समाधान पर ध्यान देने के साथ इस अवधारणा को और मजबूत किया गया।

वेबस्टर (1990) ने तर्क दिया कि विकास संबंधी समस्याओं को समझने के लिए हमें वैश्विक रूप से गरीब देशों के स्थान को उनके सामाजिक और आर्थिक संबंधों के संदर्भ में एक दूसरे के साथ जांचना होगा। दूसरी बात यह है कि विकास पर जो प्रभाव पड़ेगा, उसके संदर्भ में विशेष समाजों की विशेष विशेषताओं का भी अध्ययन करना प्रमुख विचार है। सामाजिक विकास के संबंध में सांस्कृतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के अंतःक्रियात्मक परिणामों का विश्लेषण करने की भी आवश्यकता है। ऐतिहासिक अतीत और योजनाओं के संदर्भ में विभिन्न सरकारों के राजनीतिक निर्णय और सामाजिक विकास के लिए उनके निष्पादन को भी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रभाव का आकलन करने के लिए जांच की आवश्यकता होती है।

पहला, दूसरा और तीसरा विश्व विभाजन दिखाने वाला एक नक्शा (वेबस्टर, 1990:5)

उपर्युक्त सुविधाओं का उपयोग करते हुए, भूगोलविदों और डेवलपर्स ने दुनिया के विकास के स्तर को दिखाने के लिए विभिन्न श्रेणियों और मानचित्रों का चित्रण किया है। ऐसा ही एक वर्गीकरण (हालांकि विवादास्पद गया) अल्फ्रेड सॉवी ने अपने 1952 के लेख 'थ्री वर्ल्डस, वन प्लैनेट' (सोलरज़, 2012) में तैयार किया था। तीन क्रम की दुनिया की अवधारणा फ्रांसीसी समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना पर आधारित है, यहाँ कुलीनता शीर्ष क्रम था; पादरी दूसरे और बाकी लोग तीसरे क्रम में गिने जाते थे। उन्होंने पूँजीवादी देशों को प्रथम विश्व, साम्यवादी देशों को द्वितीय और शेष अन्य देशों को तीसरी दुनिया के रूप में चित्रित किया।

यह वर्गीकरण हमें विकसित बाजार–अर्थव्यवस्था वाले देशों को पहली दुनिया के रूप में आंशिक रूप से समझने में मदद करता है, जो देश औद्योगीकृत हैं या औद्योगीकरण की प्रक्रिया में हैं और उन्हें दूसरी दुनिया के रूप में निर्देशित किया जाता है और तीसरी दुनिया के रूप में सबसे कम विकसित और गरीब देशों को कहा जाता है (वोल्फ–फिलिप्स) , 1987)।

विश्व बैंक ने निम्न और मध्यम आय वाले विकासशील देशों (विश्व विकास रिपोर्ट, 1978) के बीच भी अंतर किया। उत्तरी अमेरिका, पश्चिमी यूरोप, जापान ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड प्रथम विश्व की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। दूसरा विश्व– पूर्व–सोवियत संघ (सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक यूनियन– उत्तरी यूरेशिया में एक संघीय संप्रभु राज्य के रूप में 1922 से 1991 तक अस्तित्व में) जैसे राज्य–नियंत्रित कम्युनिस्ट देशों से मिलकर बना था। तीसरा विश्व–अन्य सभी अल्प विकसित देशों का प्रतिनिधित्व करता है।

विभिन्न विकास रिपोर्टों के साहित्य की समीक्षा विभिन्न सांख्यिकीय प्रमाण प्रदान करके हमें विकास के स्तरों के संदर्भ में सक्षम बनाती है। आमतौर पर वे जनसंख्या वृद्धि, जीवन प्रत्याशा, स्वास्थ्य, शिक्षा, नागरीकता, आय वितरण, औद्योगिकीकरण और ऊर्जा की खपत जैसी विशेषताओं का उल्लेख करते हैं। यह ध्यान दिया जाता है कि अमीर और गरीब के बीच की खाई बड़ी है। तीसरी दुनिया के देशों में अधिकांश लोग बहुत गरीब हैं। इन देशों का एक औपनिवेशिक अतीत भी है। व्यापक रूप से फैली गरीबी महत्वपूर्ण संसाधनों के दुरुपयोग के साथ हाथ में जाती है – उदाहरण के लिए – बहुत श्रम बहुत समय के लिए बेकार है, जबकि जब उपयोग में श्रम उत्पादकता बहुत कम है। यह भी देखा जा सकता है कि कुछ देशों ने निरंतर विकास हासिल किया है जो उन्हें विकसित करने की अनुमति देता है जबकि अन्य कई ऐसा नहीं कर सकते। उन दोनों के बीच यह अंतर अनुशासन के संस्थापक पिता (यानी, स्मिथ, रिकार्डो, माल्थस, मार्क्स) के दिनों से अर्थशास्त्र के मूल में रहा है, जिनकी चिंता राष्ट्रों के धन के निर्धारकों (मिश्रा और पुरी) के अध्ययन का था , 2006)।

बोध प्रश्न I

i) किस प्रमुख ऐतिहासिक मील के पत्थर के बाद विकास नीति की नींव रखी गई?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) सामाजिक विकास के संबंध में सांस्कृतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के अंतःक्रियात्मक परिणामों का विश्लेषण करना चाहिए या नहीं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) किसने तीन दुनिया, एक ग्रह के विचार की अवधारणा की?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

vi) किस अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने 1970 के दशक में निम्न और मध्यम आय वाले विकासशील देशों के बीच अंतर किया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 विकसित, विकासशील और अविकसित

कुज़नेत (1968) के अनुसार विकसित और कम विकसित (या विकासशील) देशों के बीच के अंतर की घोषणा संयुक्त राष्ट्र ने 1965 के अपने राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी एल्बम में की थी। साम्यवादी देशों को छोड़कर सूची में उत्तरी अमेरिका (यानी संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा) शामिल थे।), यूरोप, ओशिनिया (यानी मोटे तौर पर ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड), जापान, और विकसित देशों के समूह में जापान को छोड़कर एशिया, दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर अफ्रीका और लैटिन अमेरिका को विकासशील देशों के समूह में रखा गया। कुजनेट (ibid) भी विकसित समूह सूची में U.S.S.R. और पूर्वी यूरोप के कुछ देशों को शामिल करने का तर्क देता है। हालांकि, वर्गीकरण का मुद्दा बहुत आसान नहीं है क्योंकि व्यापार और वाणिज्य पर संसाधन उपयोग और एकाधिकार के रूप में राजनीतिक लाभ का उपयोग करके कुछ देशों के विकसित राज्य के कारणों में जटिलताएं शामिल हैं।

दूसरी ओर, यह मुद्दा बहस का विषय बन जाता है जैसे क्योंकि विकासशील और विकसित देशों के द्वंद्वात्मक विभाजन भी नीति स्तर के मुद्दों को विकसित देशों से विकासशील देशों में संसाधनों के स्थानांतरित करने के लिए आमंत्रित करते हैं (पियर्सन एट अल, 1969)। इस तरह की अनिश्चित पृष्ठभूमि में अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई संगठनों ने आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) की सदस्यता का उपयोग विकसित देश होने के निर्धारण के मापदंड के रूप में किया है। लेकिन ऐसा तरीका दोषपूर्ण लगता है, जब हम विकसित के रूप में 15 से 20 प्रतिशत देशों तक पहुंच जाते हैं और 80 से 85 प्रतिशत देशों को विकासशील देशों के रूप में शेष रहते हैं (नीलसन, 2011)। यहाँ जो प्रश्न उठता है, वह यह है कि किस शब्द का प्रयोग किस देश के वर्गीकरण के लिए किया जाएगा? भगवती (1971) का तर्क है

कि शब्द का चुनाव विश्लेषक और लेखक की संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। यदि हम वर्ष 2020 के लिए विभिन्न देशों के वर्गीकरण के लिए विश्व बैंक एटलस विधि का उपयोग करके विश्व बैंक की कार्यप्रणाली पर ध्यान देंगे तो हम पा सकते हैं कि जिन देशों में प्रति व्यक्ति जीएनआई $ 1,026 और $ 3,995 है, उन्हें निम्न–आय वाली अर्थव्यवस्थाओं के रूप में जाना जाता है। $ 3,996 और $ 12,375 के बीच प्रति व्यक्ति GNI वाले देशों को निम्न मध्यम आय वर्ग में रखा जाता है। और 12,376 डॉलर या उससे अधिक की प्रति व्यक्ति जीएनआई वाले देशों को ऊपरी मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं (विश्व बैंक, डेटा हेल्प डेस्क) के रूप में कहा जाता है।

हालांकि, इस संदर्भ में, संयुक्त राष्ट्र स्पष्ट करता है कि विकसित या विकासशील देशों की स्थिति निर्धारित करने के लिए कोई स्थापित मानदंड नहीं हैं। इस तरह के मानदंड केवल आँकड़ों को चित्रित करने के लिए अपनाए गए सुविधाजनक उपायों को दर्शाते हैं। इसलिए हम इस तरह के सुविधाजनक विचारों के आधार पर विकास ट्रैक के पैमाने पर इसकी श्रेणीकरण के संबंध में किसी विशेष देश की पहचान करने के लिए अपने निर्णयों का आधार नहीं बना सकते हैं। यह इस तथ्य के कारण झूठे मापदंड के रूप में भी खड़ा है कि आर्थिक विकास किसी विशेष देश में समानता नहीं लाता है। यदि आर्थिक विकास के फलो यानि परिणामों को ठीक से वितरित नहीं किया जाता है, तो समाज का अमीर वर्ग अमीर हो जाएगा और गरीब गरीब रह जाता है (संयुक्त राष्ट्र, 2019, सांख्यिकीय इयरबुक 62 वें अंक का अनुलग्नक I)।

बोध प्रश्न II

निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखे:

i) संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपने ..... में विकसित और अल्प–विकसित (या विकासशील) देशों के बीच अंतर की घोषणा की गई थी। ..... 1965 का एल्बम?

ii) विकासशील और विकसित देशों में द्वंद्वात्मक विभाजन बहस का विषय बन गया क्योंकि इसने नीतिगत स्तर के मुद्दों को आमंत्रित किया जैसे ..... विकसित से विकासशील देशों तक।

iii) OECD का पूरा नाम क्या है?

.....

.....

iv) संयुक्त राष्ट्र स्पष्ट करता है कि विकसित या विकासशील देशों की स्थिति निर्धारित करने के लिए कोई स्थापित मापदंड नहीं हैं। इस तरह के मानदंड केवल दर्शाते हैं .... आँकड़ों को चित्रित करने के लिए अपनाए गए उपाय।

3.3.1 विकसित देश

उपयुक्त चर्चा विशेष देशों के नागरिकों के जीवन स्तर, उनके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), उनके सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी) और उनकी प्रति व्यक्ति आय की तुलना किया गया है। मोटे तौर पर इसे विकसित देशों के निर्धारण के पैमाने के रूप में इस्तेमाल किया जा जाता है। विकसित देश औद्योगिक देशों के पर्याय के रूप में खड़े हैं जिनकी उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ

हैं। इसे अग्रिम तकनीकी अवसंरचना और विविध औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों द्वारा वर्गीकृत किया गया है। इसके कारण, विकसित देशों के नागरिक आमतौर पर एक गुणवत्ता वाली जीवन शैली का आनंद लेते हैं और स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं तक बेहतर पहुंच रखते हैं। विकसित देशों और उन्होंने आर्थिक प्रगति हासिल करने के तरीके इस प्रकार अविकसित देशों के लिए पदचिह्न के रूप में निर्धारित किए हैं। पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने बहुत ही अलग तरीके से एक विकसित देश को इस प्रकार परिभाषित किया हैः ''एक विकसित देश वह है जो अपने सभी नागरिकों को सुरक्षित वातावरण में स्वतंत्र और स्वस्थ जीवन का आनंद लेने की अनुमति देता है'' (UNIS, 2000) साँग एट अल, 2013) द्वारा संदर्भित।

विकसित देशों की सामाजिक विशेषताओं में उनके पास मौजूद सांस्कृतिक विरासत ये करीबी संबंध विश्वास और सामाजिक जीवन के पैटर्न, भौतिकवादी जीवन की प्राथमिकताएं, वैज्ञानिक स्वभाव आदि इन देशों के आधुनिकीकरण और आर्थिक विकास का मार्ग दिखाते हैं। आधुनिकता को गले लगाने के प्रयासों ने भी औद्योगिक क्षेत्र विस्तार के साथ वृद्धि और विकास के रूप में परिणाम दिए। सैमुअल पी हंटिंगटन (1996ः 68) ने आधुनिकीकरण को ''औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, साक्षरता के बढ़ते स्तर, शिक्षा, धन और सामाजिक गतिशीलता, और अधिक जटिल और विविध व्यावसायिक संरचनाओं'' के रूप में वर्णित किया। दूसरी ओर, पश्चिमीकरण को ''पश्चिमी सभ्यता के तरीकों में रूपांतरण'' के रूप में देखा जाता है। इसे ऐसी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है जिसमें गैर–पश्चिमी लोगों को पश्चिमी संस्कृति में या ''यूरोपीय संस्कृति में आत्मसात'' किया जाता है। इसलिए, पश्चिमीकरण और यूरोपीयकरण इस संदर्भ में परस्पर विनिमेय योग्य हो जाता है।

हालांकि, आधुनिकीकरण सिद्धांत की आलोचना भी की गई है और कई सामाजिक वैज्ञानिकों (अमीन, 1973; गिद्देंस, 1991, स्कॉट, 1995) द्वारा इसे लगभग छोड़ दिया गया है। इस सिद्धांत की आलोचना नव–आधुनिकतावादी या मार्क्सवादी दृष्टिकोण से की जा रही थी। यह कहा गया कि आधुनिकीकरण सिद्धांत बहुत पश्चिमी–केंद्रित है और इसका गैर–पश्चिमी दुनिया से कोई लेना–देना नहीं है। पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अटलांटिक के देश, जाहिर है, रोस्टो द्वारा उल्लिखित प्रक्रिया के माध्यम से विकसित हुए। रोस्टो ने यह निश्चित रूप से प्रस्तुत किया कि कैसे आधुनिक बनने के लिए, देश विकास के पांच चरणों से गुजरते हैं अर्थात पारंपरिक समाज, विकास की उड़ान भरने की पूर्व शर्तें (टेक–ऑफ), विकास की उड़ान भरना (टेक–ऑफ), और परिपक्वता की यात्रा और उच्च जन साधारण उपभोग की आयु। (रोस्टो, 1960ः 4–16)।

इसलिए, इस तथ्य से कोई इनकार नहीं है कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पहले औद्योगीकरण और व्यावसायीकरण की जुड़वां प्रक्रियाओं के माध्यम से पश्चिम में हुई ('इमर्सन, 1960ः 43)। यह औद्योगिक क्रांति थी जिसने एक पारंपरिक कृषि समाज से आधुनिक औद्योगिक और व्यावसायिक समाज में बदलाव के पूरे आंदोलन को हवा दी। विस्नेव्स्की (2006ः 9) ने कहा कि ''आधुनिकीकरण एक महान धुरी बनाता है जिसके चारों ओर इतिहास की मुख्य घटनाएं 18 वीं शताब्दी के अंत से चली आ रही हैं, इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति का समय और महान फ्रांसीसी क्रांति, और धीरे–धीरे हमेशा के लिए नए रूप में फैल गया देशों और क्षेत्रों, विशेष रूप से 20 वीं सदी में"। इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर और विकासवादी सिद्धांत से प्रभावित होकर, आधुनिकीकरण को पारंपरिक समाज से एक रैखिक प्रक्रिया माना जाता है या एक अविकसित देश एक अधिक उन्नत आधुनिक समाज की ओर बढ़ता है। इस प्रकार, विकास के आर्थिक केंद्रित दृष्टिकोण से, पारंपरिक समाज को अक्सर ग्रामीण, पिछड़ा,

गैर–वैज्ञानिक, भावनात्मक या अविकसित माना जाता है, जबकि इसके विपरीत आधुनिक समाज शहरी, औद्योगिक, तर्कसंगत और वैज्ञानिक और विकसित होता है। इस प्रकार, विकास इन द्विभाजनों (द्विकोटोमी) को दर्शाने के लिए स्थापित किया गया है।

3.3.2 विकासशील देश

विकासशील देश दुनिया की अधिकांश आबादी और क्षेत्र का गठन करते हैं। एक अनुमान के अनुसार विकासशील देश मे कुल भूमि क्षेत्र का पचहत्तर प्रतिशत और दुनिया की कुल आबादी का लगभग पचहत्तर प्रतिशत (अल्वारेडो और गैसपेरिनी, 2015) शामिल हैं। किसी देश की स्थिति को 'विकासशील' के रूप में निर्धारित करने के लिए प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मापदंड का उपयोग किया जाता है। इसका मतलब है कि एक वर्ष में देश द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का जब अमेरिकी डॉलर के रूप में विश्लेषण किया जाता है। विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के अनुसार, इसके दो सदस्य देश विकासशील देशों की श्रेणी में आते हैं। यह उन देशों का एक विविध समूह है, जिनसे निपटने के लिए अलग–अलग आकांक्षाएं और समस्याएं हैं। हालांकि, वे संख्या में बहुत महत्वपूर्ण हैं और इस प्रकार वैश्विक अर्थव्यवस्था (डब्ल्यूटीओ, विकासशील देशों) के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। व्यापार और विकास समिति के माध्यम से संगठन के तहत इन देशों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। विशेष अधिकारों और उदार नियमों के प्रावधान विकासशील देशों के लिए तैयार किए गए हैं ताकि वे इन एहसानों का उपयोग करके बड़े पैमाने पर विकसित हो सकें। यही नहीं, विकासशील देशों के साथ व्यापार–वार्ता करते समय विकसित देशों द्वारा कुछ तरजीही उपचारों और इसी तरह के प्रस्तावों की गैर–अपेक्षाओं के लिए टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौता (GATT) और व्यापार में सामान्य समझौता (GATS) का भी प्रावधान किया गया। ।

विकासशील देशों को कानूनी सहायता, प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय, बाजार पहुंच के लिए बढ़े हुए अवसर, उनके हितों की सुरक्षा और विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सहायता प्रदान की जाती है। कोफी अन्नान (UNIS, 2000 के अनुसार साँग एट अल, 2013 द्वारा प्रदान की गई परिभाषा से) हम यह तर्क देते हैं कि विकास को मानवीय कारकों के साथ भी मापा जाएगा। इस प्रकार विकासशील देश जनसंख्या के संबंध में औद्योगीकरण को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और उपर्युक्त प्रावधानों के साथ जीवन स्तर को ऊपर उठाने का भी प्रयास करते हैं।

जब हम विकासशील देशों के लिए विस्तृत मानदंड को देखते हैं, तो हमें पता चलता हैं कि प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, जीवन प्रत्याशा, साक्षरता की दर, स्वतंत्रता सूचकांक आदि जैसे सांख्यिकीय परिमापों का उपयोग किया जाता है। ऐसा ही एक स्केलिंग हम संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) में देख सकते हैं। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र ने भी विकास के संदर्भ में दुनिया के देशों के लिए सहस्त्राब्दी उद्घोषणा (मिलेनियम घोषणा) की कल्पना की है। ये लक्ष्य विकासशील देशों (संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी घोषणा, 2000) की नीति और कार्यप्रणाली को निर्धारित करने में बहुत सहायक हैं। सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र के लक्ष्य भी इस तरह के लक्ष्यों के लिए नए हैं (संयुक्त राष्ट्र, ट्रासफोर्मिंग अवर वर्ल्डः 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट)।

विश्व बैंक विकासशील देशों को एक आकलन तरीके से देखता है और कहता है कि इन देशों में करों के स्तर अपेक्षाकृत कम हैं, वे प्रतिगामी राजस्व साधनों पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं, और उनके पास स्थानांतरण कार्यक्रमों (विश्व बैंक, 2006) का कम कवरेज और लाभ का

स्तर है। इसलिए, यह तर्क दिया जा सकता है कि विकासशील देश पर्याप्त बुनियादी ढांचे की सीमाओं से पीड़ित हैं जो इस बात पर सवाल उठाते हैं कि अनुमानित विकास दर की उच्च दर वास्तव में महसूस की जाएगी या नहीं। इसलिए, विकासशील देश आर्थिक विकास और संस्थागत क्षमता के मामले में बहुत अलग हैं।

3.3.3 अविकसित देश

सियुम (2018) दुनिया में विभिन्न प्रकार के देशों के बीच अंतर का वर्णन करने के लिए एक बहुत ही अनूठा तीन मंडलय खंड प्रदान करता है। वह कहते हैं कि कुछ देश ऐसे हैं जिनके नागरिक वजन कम रखने के लिए बहुत पैसा खर्च करते हैं, दूसरे प्रकार के देश जिनके नागरिक खाने के लिये जीते हैं और तीसरे प्रकार के ऐसे देश हैं जिनके नागरिकों को यह नहीं पता है कि बाद के भोजन कहाँ से आएंगे। किसी तरह, अंतिम श्रेणी किसी तरह से अविकसित देशों से संबंधित है जहां लोगों का अस्तित्व सत्तारूढ़ कुलीन वर्ग के समक्ष बहुत सारे सवाल पैदा करता है। यहाँ, यह उपनिवेशवाद और नव–उपनिवेशवाद के विचार से संबंधित है। उपनिवेशवाद के दौरान कुछ देशों ने उपनिवेशित देश की राजनीति पर कुल या आंशिक नियंत्रण हासिल कर लिया और उनका आर्थिक रूप से शोषण किया (ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी, 2006)। इस संदर्भ में, नव–उपनिवेशवादी दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि उपनिवेशवाद के युग को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया गया है, क्योंकि कई राज्य जो स्वतंत्र प्रतीत होते हैं, वे अभी भी आर्थिक और राजनीतिक रूप से, ज्यादातर आर्थिक साधनों के माध्यम से, निरंतर पूर्व उपनिवेशों का प्रभुत्व सुनिश्चित करने के लिए बाहर से नियंत्रित किये।

आंद्रे गौंडर फ्रैंक के अनुसार, पूर्व औपनिवेशिक राष्ट्र विदेशी व्यापार और निवेश के क्षेत्रों में पश्चिमी औद्योगिक देशों पर निर्भरता के कारण अविकसित थे। इन रिश्तों ने उनके विकास को कुंद किया (फ्रैंक, 1960)। ये स्थान गरीब और कम विकसित होने को कारण हैं, शोषण, पूंजीवाद और विश्व व्यापार की संरचना। आधुनिकीकरण तीसरी दुनिया के ऐतिहासिक अनुभव को भूल जाता है। विकसित और विकासशील देशों के बीच संबंधों का अध्ययन करने के लिए, 1950 के दशक के उत्तरार्ध में लैटिन अमेरिका के संयुक्त राष्ट्र आर्थिक आयोग के तत्कालीन निदेशक राउल प्रीबिश के मार्गदर्शन में निर्भरता सिद्धांत विकसित किया गया था। रिश्तों को समझने के लिए सबसे उचित और उपयुक्त होने के नाते, निर्भरता सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि संसाधन गरीब और अविकसित राज्यों से ''समृद्ध'' राज्यों के एक ''कोर'' ओर बहते हैं जो अल्पविकसित की कीमत पर समृद्ध होते हैं। अन्य लोगों के साथ प्रीबिश ने पाया कि गरीब देशों को औद्योगिकीकरण की प्रगति से लाभ नहीं मिलता है। इसके विपरीत, अमीर देशों की आर्थिक उन्नति अक्सर गरीब देशों के लिए आर्थिक संघर्ष और समस्याएं पैदा करती है।

प्रीबिश (उदार सुधारक), आंद्रे गौंडर फ्रैंक (मार्क्सवादी) और वालरस्टीन (विश्व प्रणाली सिद्धांतकार) के बीच बहस हमें विकसित देशों के संबंध में कई अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। सबसे पहले हम सनकेल (1969) से मदद ले सकते हैं जिन्होंने तर्क दिया कि किसी राज्य का आर्थिक विकास बाहरी राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों पर बहुत निर्भर है और इसलिए विकास नीतियों पर भी निर्भर करता है। निर्भरता सिद्धांत को परिभाषित करते हुए सैंटोस (1971) ने विभिन्न देशों के रिश्तों की ऐतिहासिक जड़ों पर प्रकाश डाला और तर्क दिया कि विश्व अर्थव्यवस्था का कामकाज कुछ देशों के अनुकूल है और बदले में जो दूसरों के लिए हानिकारक है। यह अधीनस्थ अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करने के लिए सीमाएँ निर्धारित करता है।

सोचे और करें 2 : मानवीय विकास सूचकांक और प्रति व्यक्ति आय के आधार प्रथम दस देशों का तुलनात्मक तालिका उपयुक्त संदर्भों का प्रयोग करके बनाये। इस सूची में भारत स्थान दिखाने का प्रयास करें।

3.4 विकास पर बहस

इमैनुअल वालरस्टीन का वर्ल्ड सिस्टम सिद्धांत आर्थिक विकास के आधार पर विभाजित दुनिया के बारे में बात करता है। सरकारों के रूपों में विभिन्न स्तरों के विभिन्न स्तरों को विकसित और अविकसित देशों के रूप में क्रमशः कोर और परिधि के रूप में लेबल किया गया है। निर्भरता सिद्धांत और विश्व प्रणाली सिद्धांत द्वारा असमानता का विकास प्रकट हुआ। इसने संशयवाद उत्पन्न किया है और विकास को रेखीय प्रगति के रूप में देखने की आलोचना की है। 1990 के दशक के बाद से, तथाकथित विकास के बाद बहस छिड़ गई (एस्कोबार 1995, रहेमा और बावट्री 1997)। विकास के बाद की अवधारणा से उत्पन्न बहसों में, आर्थिकी–केंद्रित विकास की धारणा के कई पहलू निम्नानुसार हैं। सबसे पहले, सबसे मजबूत आलोचना इस विचार की चिंता करती है कि आर्थिक विकास प्रगति के साथ समान है। कुछ मामलों में, आर्थिक विकास का एकमात्र पीछा अधिक समस्याओं के बारे में लाएगा जो बदले में प्रगति को नुकसान पहुंचाता है। ऊपर उल्लिखित वैश्विक और क्षेत्रीय असमानता, इसका एक उदाहरण है। एक दूसरा उदाहरण गरीबी में कमी की विफलता है जो असमान आर्थिक प्रणाली के परिणामों को दिखाने के लिए एक केंद्रीय पहलू था। इस आर्थिक–केंद्रित विकास प्रतिमान के तहत, यह माना जाता है कि आर्थिक विकास के साथ गरीबी उन्मूलन स्वाभाविक रूप से प्राप्त किया जा सकता है। हालाँकि, असमानता की स्थितियों से गरीबी कम नहीं हुई है बल्कि एक असमान आर्थिक प्रणाली के भीतर और भी बदतर हो गई है (देसाई 1991, पृष्ठ 351–352)। एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या यह है कि आर्थिक विकास की एकमात्र खोज अक्सर प्राकृतिक संसाधनों की उच्च लागत पर आधारित होती है और इसके कारण पर्यावरण संबंधी गंभीर समस्याएं पैदा होती हैं।

दूसरे, आर्थिकी केंद्रित विकास पाराडाईम की आलोचना इस आधार पर की गई है कि विकास एक प्रवचन बन गया है जो विकसित और अविकसित देशों या सामाजिक समूहों (एस्कोबार 1995य फर्ग्यूसन 1990) के बीच शक्ति संबंधों का निर्माण करता है। तीसरा, आर्थिक–केंद्रित विकास प्रक्रिया में अपनाए गए टॉप–डाउन दृष्टिकोण की स्थानीय लोगों की अनदेखी और स्थानीय लोगों की अधीनता के लिए आलोचना की जाती है। चौथा, यह अनुमान कि पारंपरिक समाज पिछड़ा और अविकसित है, अक्सर पारंपरिक संस्कृति और स्थानीय रिश्तों को नुकसान पहुंचाता है। दरअसल, इन समस्याओं के कारण, कई विद्वानों का तर्क है कि विकास कुछ गरीब देशों या क्षेत्रों में अविकसितता और यहां तक कि अधो–विकास का कारण बन सकता है (मीयोरस एवं राणासीघें 2003; रॉय 1999)। इन आलोचकों ने विकास की समझ को बढ़ाया है। विकास शब्द अब केवल आर्थिक विकास के बजाय सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं जैसे व्यापक क्षितिज तक फैला हुआ है। इसके अलावा, कई विद्वान विकास योजना और निर्णय लेने के दौरान स्थानीय भागीदारी और स्थानीय ज्ञान को शामिल करके एक भागीदारी विकास दृष्टिकोण के रूप में एक डाउन–अप दृष्टिकोण का सुझाव देते हैं (ग्रिलो 1997, होबार्ट 1993)। इस प्रकार, विकास की समझ अब आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों की पसंद और क्षमताओं (सेन 1989) के विस्तार के लिए विस्तारित है।

बोध प्रश्न 3

नीचे दिये प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दें :

i) विश्व प्रणाली सिद्धांत को किसने प्रतिपादित किया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) अर्थव्यवस्था–केंद्रित विकास प्रतिमान की आलोचना इस आधार पर की गई है कि विकास एक प्रवचन बन गया है, जो ..... के बीच शक्ति संबंध बनाता है। ..... देश या सामाजिक समूह।

iii) लोगों की पसंद और क्षमताओं के विस्तार के संदर्भ में विकास की अवधारणा का विस्तार करने के लिए किसने तर्क दिया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) कई विद्वानों का तर्क है कि विकास का कारण हो सकता है ..... और यहां तक कि कुछ गरीब देशों या रेजियो में विकास भी।

3.5 सारांश

इस इकाई में हमने विकसित, विकासशील और अविकसित के संदर्भ में देशों के वर्गीकरण का पता लगाया। यह वर्गीकरण हमें पहले विश्व के रूप में विकसित बाजार–अर्थव्यवस्था वाले देशों को आंशिक रूप से समझने में मदद करता है, जो देश औद्योगीकृत हैं या औद्योगीकरण की प्रक्रिया में हैं और उन्हें दूसरी दुनिया के रूप में और तीसरी दुनिया के रूप में सबसे कम विकसित और गरीब देशों के रूप में निर्देशित किया गया है। इमैनुअल वालरस्टीन का वर्ल्ड सिस्टम सिद्धांत आर्थिक विकास के आधार पर विभाजित दुनिया के बारे में बात करता है। सरकारों के रूप में विभिन्न स्तरों के विभिन्न स्तरों को विकसित और अविकसित देशों में क्रमशः कोर और परिधि के रूप में लेबल किया गया है। इस प्रकार, विकास की समझ अब आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों की पसंद और क्षमताओं का विस्तार करने के लिए विस्तारित है।

3.6 शब्दावली

विकास : संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का ऊर्ध्वगामी आंदोलन।

तीन दुनिया, एक ग्रह (अवधारणा) : तीन क्रम की दुनिया की अवधारणा फ्रांसीसी समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना पर आधारित है, यहाँ कुलीनता पहला आदेश थाय पादरी दूसरे और बाकी लोग तीसरे क्रम में गिने जाते थे।

गरीबी : विश्व बैंक के अनुसार प्रति दिन 1.90 अमेरिकी डॉलर से कम की आय वाले लोगों को अत्यधिक गरीबी के समूह में वर्गीकृत किया गया है और मध्यम गरीबी समूह में + 3.10 से कम आय वाले लोगों को रखा गया है।

निम्न–आय वाली अर्थव्यवस्थाएँ : विश्व बैंक ने 1,026 डॉलर और 3,995 डॉलर के बीच प्रति व्यक्ति जीएनआई वाले देशों को कम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं के रूप में वर्गीकृत किया।

निम्न मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाएँ : विश्व बैंक ने मध्यम आय वाले अर्थव्यवस्थाओं के रूप में $ 3,996 और $ 12,375 के बीच प्रति व्यक्ति जीएनआई वाले देशों को वर्गीकृत किया।

ऊपरी मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाएं: विश्व बैंक ने 12,376 डॉलर या उससे अधिक प्रति व्यक्ति जीएनआई वाले देशों को वर्गीकृत किया, जिन्हें ऊपरी मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्था कहा जाता है।

पभिचमीकरण : वह सामाजिक प्रक्रिया जिसमें गैर–पश्चिमी लोगों को पश्चिमी संस्कृति पैटर्न में आत्मसात किया जाता है।

आधुनिकीकरण : सैमुअल पी। हंटिंगटन (1996) ने आधुनिकीकरण को ''औद्योगीकरण, शहरीकरण, साक्षरता के बढ़ते स्तर, शिक्षा, धन और सामाजिक गतिशीलता, और अधिक जटिल और विविध व्यावसायिक संरचनाओं'' के रूप में परिभाषित किया।

सतत विकास : ब्रूंडलैंड रिपोर्ट सतत विकास को परिभाषित करती है क्योंकि विकास जो वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है, जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना होता है।

3.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

वोल्फगैंग, सैक्स (edt) 1992. द डेवलपमेंट डिक्शनरीः ए गाइड टू नोल्डगिंड पावर, लंदनः लंदन जेड बुक्स pp1–21।

बर्नस्टीन, हेनरी 1.9.3. उन्नत विकास और विकास हरंड्सवर्थ। पेंगुइन, 19 Henry

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

i) द्वितीय विश्व युद्ध और विघटन प्रक्रिया और गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक बहिष्कार की प्रमुख सामाजिक समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित करने के बाद।

ii) हां, सामाजिक विकास के संबंध में सांस्कृतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं के अंतःक्रियात्मक परिणामों का विश्लेषण करना चाहिए।

iii) 1952 में अल्फ्रेड सॉवी।

iv) विश्व बैंक ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में 1978 की विश्व विकास रिपोर्ट का शीर्षक दिया।

बोध प्रश्न II

i) राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी।

ii) संसाधनों का हस्तांतरण।

iii) आर्थिक सहयोग और विकास का संगठन।

iv) सुविधाजनक।

बोध प्रश्न III

i) इमैनुअल वालरस्टीन।

ii) विकसित और अविकसित।

iii) अमर्त्य सेन।

iv) विकास जारी है

संदर्भ (References)

अल्वारेडो, फैकुंडो और लियोनार्डो गैसपेरिनी, 2015, विकासशील देशों में असमानता और गरीबी में हालिया रुझान, एंथनी बी। एटकिंसन, फ्रांकोइस बोर्गुइग्नॉन (सं।) हैंडबुक ऑफ इनकम डिस्ट्रीब्यूशन, वॉल्यूम। 2A (प्रथम संस्करण), नॉर्थ हॉलैंड, एम्स्टर्डम।

एरन, रेमंड, 2008 (छठा प्रिंट), समाजशास्त्रीय चिंतन में मुख्य धाराएंः मोंटेसक्यू, कॉम्टे, मार्क्स, डीटोकविले, समाजशास्त्री और 1848 की क्रांति, वॉल्यूम। 1, लेनदेन प्रकाशक, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन।

एरन, रेमंड, 2009 (थर्ड प्रिंट), समाजशास्त्रीय चिंतन में मुख्य धाराएँः दुर्खीम, परेतो, वेबर, वॉल्यूम। 2, ट्रांजैक्शन पब्लिशर्स, यूएसए और यूके।

कार्नेइरो, पी। और जे.जे. भ्मबाउंद। 2003, 'मानव पूंजी नीति', IZA चर्चा पत्र 821, श्रम अध्ययन संस्थान (IZA)।

कोहन, सैमुअल और ग्रेगरी हुक, 2016,। परिचयः ग्रेगरी हुक (एड.) सोशियोलॉजी ऑफ डेवलपमेंट हैंडबुक, कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के लिए एक घोषणापत्र।

क्रैन, विलियम, 2014 (छठा संस्करण), विकास के सिद्धांतः अवधारणाएं और अनुप्रयोग, पियर्सन एजुकेशन लिमिटेड, एडिनबर्ग गेट, हार्लो, यू.के.

देसाई, एम।, 1991, मात्रात्मक मार्क्सवाद में विधि संबंधी समस्याएं, पी. डुनने (सं.) मात्रात्मक मार्क्सवाद, राजनीति प्रेस, कैम्ब्रिज, यू.के.

इलियट, जूलिया एट. अल., 2001, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी एंड थिसॉरस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

इमर्सन, रूपर्ट, 1960, एम्पायर से नेशन, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, हार्वर्ड।

एस्कोबार, आर्टुरो, 1995, एनकाउंटरिंग डेवलपमेंटः द मेकिंग एंड अनमेकिंग ऑफ द थर्ड वर्ल्ड, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन।

इवान, ग्राहम और जेफरी न्यून्हम (सं.), 1998, पेंग्विन डिक्शनरी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस, पेंगुइन बुक्स, लंदन।

फर्ग्यूसन, जेम्स, 1994 (पहली बार प्रकाशित पद 1990), द एंटी–पॉलिटिक्स मशीनः डेवलपमेंट, डेपोलिटाइजेशन, और लेसोथो में नौकरशाही शक्ति, मिनेसोटा विश्वविद्यालय, लंदन

फेरारो, विन्सेन्ट, 2008, ''डिपेंडेंसी थ्योरीः एन इंट्रोडक्शन,'' जियोर्जियो सेकेंडरी (एड.) द डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स रीडर, रूटलेज, लंदन।

जेम्स डी कॉकक्रॉफ्ट, आंद्रे गौंडर फ्रैंक, और डेल जॉनसन, एड., निर्भरता और अविकसितता, एंकर बुक्स, न्यूयॉर्क में 1972 में फ्रैंक, आंद्रे गौंडर, ''अविकसित विकास,''।

ग्रिलो, आर.डी., 199 ses, विकास के प्रवचनः आर डी। ग्रिलो और आर.एल. स्ट्राइरत (सं.) में विचार, विकास और विकासः मानवशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, बेर प्रकाशक, ऑक्सफोर्ड से मानवविज्ञान का दृश्य।

होबार्ट, मार्क, 1993, एन एंथ्रोपोलॉजिकल क्रिटिक ऑफ डेवलपमेंटः द ग्रोथ ऑफ इग्नोरेंस, रूटलेज, लंदन।

हंटिंगटन, सैमुअल पी।, 1968, बदलते समाज में राजनीतिक आदेश, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, येल।

Meurs, Mieke और Rasika Ranasinghe, 2003, डी–डेवलपमेंट इन पोस्ट–सोशलिज्मः कॉन्सेप्चुअल एंड मेजरमेंट इश्यूज, पॉलिटिक्स एंड सोसाइटी, वॉल्यूम। 31 नंबर 1, मार्च 2003, पीपी 31–53।

मिश्रा, एस। और वी.के. पुरी, 2006 (12 वां संस्करण), अर्थशास्त्र और विकास का अर्थशास्त्रः सिद्धांत और व्यवहार, हिमालय प्रकाशन हाउस, मुंबई।

मायर्डल, गुन्नार, 1974, व्हाट इज डेवलपमेंट, जर्नल ऑफ इकोनॉमिक इश्यूज, वॉल्यूम। 8, नंबर 4 (दिसंबर, 1974), पीपी। 729–736।

नीलसन, लिंग, 2011, आईएमएफ वर्किंग पेपर 11/31, स्मअमस देशों का वर्गीकरण उनके विकास के स्तर के आधार परः यह कैसे किया जाता है और यह कैसे किया जा सकता है', रणनीति, नीति और समीक्षा विभाग, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी, 2006 (प्रथम संस्करण तीसरा छाप), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।

पियर्सन, लेस्टर बी, एट अल, 1969, पार्टनर्स इन डेवलपमेंटः कमिशन ऑन इंटरनेशनल डेवलपमेंट, प्रेगर पब्लिशर्स, न्यूयॉर्क।

रहनीमा, माजिद और विक्टोरिया बावट्री (सं.), 1997, द पोस्ट–डेवलपमेंट रीडर, जेड बुक्स, लंदन।

रोस्टो, वॉल्ट व्हिटमैन, 1960, द स्टेज ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथः ए नॉन–कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया।

रॉय, सारा, 1999, डी–डेवलपमेंट रिविजिटेडः फिलिस्तीनी अर्थव्यवस्था और समाज चूंकि ओस्लो, जर्नल ऑफ फिलिस्तीन स्टडीज, वॉल्यूम। 28, नंबर 3 (स्प्रिंग, 1999), पीपी। 64–82।

सैंटोस, थोटोनियो डॉस, 1971, ''द स्ट्रक्चर ऑफ डिपेंडेंस'', में के.टी. अमेरिका के साम्राज्यवाद, पोर्टर सार्जेंट, बोस्टन में फान और डोनाल्ड सी। होजेस (सं।) रीडिंग।

सेन, अमर्त्य, विकास क्षमता विस्तार के रूप में, विकास योजना की पत्रिका, साको फुकुदा–पार और ए.के. में पुनर्मुद्रित। शिवा कुमार (सं।) 2003, रीडिंग इन ह्यूमन डेवलपमेंट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पीपी। 3–16।

शर्मा, के। एल।, 1978, निर्माण संगठन में उद्यमिता के विश्लेषण के लिए एक बहु–परिवर्तनीय मॉडल, समाजशास्त्रीय बुलेटिन, टवस.27, नंबर 1।

सियुम, नेग्युसी, 2018, अफ्रीका संभावित होने के बावजूद अविकसित क्यों बना हुआ है? कौन सा सिद्धांत अफ्रीका को विकसित करने में मदद कर सकता है?, ओपन एक्सेस बायोस्टैटिस्टिक्स एंड बायोइनफॉरमैटिक्स, वॉल्यूम। 1, अंक 2।

Solarz, Marcin Wojciech, 2012, थर्ड वर्ल्ड ': द 60 वीं एनिवर्सरी ऑफ ए कॉन्सेप्ट, चेंज हिस्ट्री, थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली, वॉल्यूम। 33, नंबर 9, पीपी 1561–1573।

गीत, जे.बी., एट अल।, 2013, डेवलपमेंट एंड एप्लीकेशन ऑफ रिस्क मैनेजमेंट सिस्टम फॉर कंज्यूमर प्रोडक्ट्स इन कंप्लायंस विद ग्लोबल हार्मोनाइजेशन, जर्नल ऑफ टॉक्सिकोलॉजी एंड एनवायर्नमेंटल हेल्थ, पार्ट बीः क्रिटिकल रिव्यूज, 16ः 1, 1–16।

सनकेल, ओस्वाल्डो, 1969, ''लैटिन अमेरिका में राष्ट्रीय विकास नीति और बाहरी निर्भरता,'' जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, वॉल्यूम। 6, नंबर 1।

संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी घोषणा, 2000, 26.03.2020 को https://undocs.org/A/RES/55/2 से एक्सेस किया गया।

संयुक्त राष्ट्र, 1995, सामाजिक विकास के लिए विश्व शिखर सम्मेलन की रिपोर्ट, कोपेनहेगन, 25.03.3030 को https://undocs.org/A/CONF.166/9 से एक्सेस किया गया।

संयुक्त राष्ट्र, 2019, सांख्यिकी के अनुलग्नक I 62 वें अंक (2019 संस्करण), सांख्यिकी प्रभाग, आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग, संयुक्त राष्ट्र।

संयुक्त राष्ट्र, हमारी दुनिया को बदलनेः 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, 26.03.2020 को https://undocs.org/A/RES/70/1 से एक्सेस किया गया।

विश्नेव्स्की, ए.जी., 2006, रूस में जनसांख्यिकी आधुनिकीकरणः 1900–2000, ओजीआई, मास्को।

वेबस्टर, एंड्रयू, 1990 (द्वितीय संस्करण), सोशियोलॉजी ऑफ डेवलपमेंट, पालग्रेव, न्यूयॉर्क का परिचय।

वुल्फ–फिलिप्स, लेस्ली, 1987, व्हाई 'थर्ड वर्ल्ड'?: ओरिजिनल, डेफिनिशन एंड यूज, थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली, वॉल्यूम। 9, नंबर 4 (अक्टूबर, 1987), पीपी। 1311–1327।

वर्ल्ड बैंक, 2006, वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्टः इक्विटी एंड डेवलपमेंट, वर्ल्ड बैंक और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, वाशिंगटन, डी.सी.

वर्ल्ड बैंक, डेटा हेल्प डेस्क, https://datahelpdesk.worldbank.org/knowledgebase/articles/906519 से 26.03.2020 पर एक्सेस किया जा सकता है।

विश्व बैंक, विश्व विकास रिपोर्ट, 1978, द वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन डी.सी.

विश्व व्यापार संगठन, विकासशील देश, https://www.wto.org/english/thewto_e/whatis_e/tif_e/dev1_e.htm 26.03.2020 से एक्सेस किया गया।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY